



जनवरी-मार्च 2021

रेल राजभाषा



संपादकीय

मैंने दिनांक 04.02.2021 को रेल मंत्रालय (रेलवे बोर्ड) में निदेशक (राजभाषा) का पदभार ग्रहण कर लिया है। यह मेरे लिए हर्ष और गौरव की बात है। मैं इस उत्तरदायित्व का पूरी क्षमता के साथ निर्वहन करने के लिए कृत संकल्प हूँ।

आप सबके समक्ष 'रेल राजभाषा' का 125वां अंक प्रस्तुत करते हुए मैं आत्मीय खुशी का अनुभव कर रहा हूँ। इस पत्रिका के माध्यम से रेलों पर कार्यरत कर्मचारियों, उनके परिजनों तथा देशभर के हिंदी प्रेमियों को अपनी सृजनात्मक साहित्यिक प्रतिभा की अभिव्यक्ति का सुअवसर मिलता है।

एक भाषा के रूप में हिंदी न सिर्फ भारत की पहचान है बल्कि यह हमारे जीवन मूल्यों, संस्कृति एवं संस्कारों की सच्ची संवाहक, संप्रेषक और परिचायक भी है। हिंदी बेहद सरल, सहज और सुगम भाषा होने के साथ-साथ विश्व की संभवतः सबसे वैज्ञानिक भाषा है। यह भारत और भारत की सामासिक संस्कृति की भाषा रही है। जिस प्रकार हिंदी भाषियों की संख्या में दिन-प्रतिदिन बढ़ोत्तरी हो रही है, उसके आधार पर कहा जा सकता है कि आज हिंदी केवल भारत की भाषा न होकर, विश्व के एक बड़े समुदाय की भाषा के रूप में विकसित हो रही है। रेल मंत्रालय का यह प्रयास है कि हिंदी के प्रयोग-प्रसार के लिए उचित माहौल तैयार किया जा सके और रेल कार्यालयों में अधिक से अधिक कार्य हिंदी में हो।

राजभाषा हिंदी के प्रयोग-प्रसार हेतु आवश्यक निर्णय लेने के लिए मंत्रालय स्तर पर रेलवे हिंदी सलाहकार समिति और रेलवे बोर्ड राजभाषा कार्यान्वयन समिति गठित हैं। इसके अतिरिक्त, राजभाषा के प्रयोग-प्रसार पर निगरानी रखने के लिए राजभाषा अधिकारियों के साथ-साथ संसदीय राजभाषा समिति द्वारा भी समय-समय पर विभिन्न रेल कार्यालयों के निरीक्षण किए जाते हैं। रेल अधिकारियों/कर्मचारियों को हिंदी में कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से रेल मंत्रालय की विभिन्न प्रोत्साहन योजनाएं लागू हैं तथा उनके लिए समय-समय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आदि भी आयोजित किए जाते हैं।

वर्ष 2019-20 में रेल मंत्रालय को राजभाषा नीति के श्रेष्ठ कार्यान्वयन के लिए राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा तृतीय कीर्ति पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

'रेल राजभाषा' हिंदी के प्रचार-प्रसार में अपनी गति से अग्रसर है जिसमें उसके सभी पाठकों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। हमारा निरंतर यह भी प्रयास रहता है कि पत्रिका रुचिपूर्ण होने के साथ-साथ राजभाषा हिंदी, स्वास्थ्य, सामाजिक और तकनीकी जानकारी से सुसज्जित हो। आशा है कि आपको 'रेल राजभाषा' का यह अंक पसंद आएगा। 'रेल राजभाषा' के आगामी अंकों को और बेहतर बनाने के लिए हम दृढ़संकल्प हैं। आपके सुझावों और मनोभावों का हार्दिक स्वागत है। आप सबको मेरी ओर से शुभकामनाएं!



आपका

(विपिन पवार)

निदेशक, राजभाषा, रेलवे बोर्ड

रेल राजभाषा

त्रैमासिक पत्रिका

वर्ष : 2021 ★ अंक : 125 ★ पृष्ठ : 44 ★ जनवरी-मार्च 2021

संरक्षक

सुनील शर्मा

अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी

प्रधान संपादक

मनोज कुमार राम

कार्यपालक निदेशक स्था. (आर.)

संपादक

विपिन पवार

निदेशक राजभाषा

उप संपादक

नीरु पटनी

संयुक्त निदेशक, राजभाषा

सह संपादक

संतोष सनसनवाल

उपनिदेशक, राजभाषा

पुष्प लता माटा

सहायक निदेशक, राजभाषा (पत्रिका)

मो. साबिर अली हसन सिद्दिकी

वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी, राजभाषा

पता

राजभाषा निदेशालय

रेल मंत्रालय (रेलवे बोर्ड)

कमरा नं. 544, रेल भवन

नई दिल्ली-110001

टेलीफोन : 47845067, 23385252 (फैक्स)

45067 (रेलवे)

ई-मेल : dol@rb.railnet.gov.in

इस अंक में

क्र.सं.	शीर्षक	लेखक/कवि	पृष्ठ सं.
1.	इंटरनेट पर हिंदी	(लेख) श्याम बाबू शर्मा	2
2.	तृप्ति का सफ़र	(रेल यात्रा वृत्तान्त) सुधीर दुबे 'अधीर'	4
3.	आप निगरानी में हैं	(कहानी) मनोज पाण्डे	9
4.	हंसे और स्वस्थ रहें	(स्वास्थ्य लेख) डॉ. विनोद गुप्ता	11
5.	क्यों न खुशी मनाऊं आज	(कविता) हरीश श्रीवास्तव	13
6.	एक अविस्मरणीय यादगार	(लघुकथा) ललित चंद्र त्रिवेदी	14
7.	बेटी करे पुकार	(कविता) साधना अग्रवाल	14
8.	माँ सब जानती है	(लघुकथा) मंजू	15
9.	बेटी	(कविता) राज रंजन श्रीवास्तव	15
10.	भारतीय रेल पर हिंदी के उन्नायक शिवसागर मिश्र	(लेख) सत्येंद्र सिंह	16
11.	रेल मंत्रालय की उपलब्धियां	---	17
12.	रेल मंत्रालय द्वारा राजभाषा सप्ताह-2020 का आयोजन (एक झलक)	---	18
13.	संसदीय राजभाषा समिति की निरीक्षण संबंधी बैठक के दृश्य	---	19
14.	रेल अंचलों से	---	20-24
15.	एक जंग : कैंसर के संग	(लेख) विपिन पवार	25
16.	औरत	(कविता) राहुल पुराकायस्थ	29
17.	सुख	(लघुकथा) पंकज शर्मा	30
18.	जिंदगी एक रेलगाड़ी	(कविता) सूर्या मिश्रा	30
19.	राहत इंदौरी का जाना	(लेख) डॉ. वरुण कुमार	31
20.	परचम	(कविता) राजेन्द्र कुमार सौंध	32
21.	उपयोगी विचारों व कार्यों द्वारा ही संभव है समय का सदुपयोग	(लेख) सीताराम गुप्ता	33
22.	आई होली	(कविता) पुष्पलता माटा	35
23.	मेरी लद्दाख यात्रा	(यात्रा वृत्तान्त) सतविंदर सिंह	36
24.	भारतीय संस्कृति, तकनीक और भाषा	(लेख) डॉ. अनंत श्रीमाली	39

(पत्रिका में प्रकाशित लेखों, रचनाओं आदि में व्यक्त विचार लेखकों, रचनाकारों के अपने हैं जिसके लिए संपादक मंडल उत्तरदायी नहीं है।)



इंटरनेट पर हिंदी

इंटरनेट से आज हम सभी अच्छी तरह से परिचित हैं। वैश्विक ग्राम की अवधारणा के पीछे इंटरनेट की भूमिका एवं उसके योगदान को नकारा नहीं जा सकता। तीसरी तकनीकी क्रांति (1980) के बाद इंटरनेट सूचनाओं के आदान-प्रदान का सबसे सुलभ साधन बन चुका है। इसने मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अपनी गहरी छाप छोड़ी है। एक अरब छत्तीस करोड़ से भी अधिक आबादी वाले भारत देश में हिंदी सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा है। देश की सत्तर प्रतिशत से अधिक आबादी इसी भाषा में अपनी अभिव्यक्ति देती है। आज अमेरिका, ब्रिटेन, मॉरीशस, गुआना, सूरीनाम, फिजी, नीदरलैंड, कनाडा, दक्षिण अफ्रीका, त्रिनिदाद, टोबैको आदि देशों में हिंदी बोलने वाले काफी लोग हैं। इंटरनेट की उपयोगिता को देखते हुए 2006 में भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम साहब ने भी कहा था कि विश्व स्तर पर हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए जरूरी है कि इंटरनेट पर हिंदी साहित्य को डाला जाए, ताकि अधिक से अधिक लोग हिंदी साहित्य से परिचित हो सकें। इससे पुस्तकों में छिपा ज्ञान इंटरनेट के माध्यम से आमजन तक आसानी से पहुंच जाएगा।

आज हम जानते हैं कि विश्वव्यापी संजाल यानी वर्ल्ड वाइड वेब के जरिए इंटरनेट प्रयोक्ता विश्व की मनचाही जानकारी पल में प्राप्त कर सकता है। जिस कार्य को पहले प्रिंटिंग मशीन ने प्रारंभ किया उसे त्वरण इंटरनेट ने दिया। इसमें कहीं भी विवाद नहीं है। जो ज्ञान कल तक मात्र पुस्तकों तक सीमित था वह इंटरनेट के माध्यम निकलकर आमजन तक सुलभ हो गया है।

इंटरनेट की उपयोगिता के मामले में जहां तक हिंदी की बात है वह सबसे पहले हिंदी की पत्र-पत्रिकाओं ने समझा। नवभारत टाइम्स, दैनिक जागरण, अमर उजाला, दैनिक भास्कर, हिंदुस्तान आदि कई हिंदी समाचार पत्रों एवं कादम्बिनी, वागर्थ, हंस, इंडिया टुडे, आउटलुक आदि हिंदी पत्रिकाओं ने अपने इंटरनेट संस्करण निकालने आरंभ किए। जबसे हिंदी का वेब पोर्टल आया, तभी से हिंदी ने इंटरनेट पर अपनी छाप छोड़ना प्रारंभ कर दिया। नई पीढ़ी के साथ-साथ पुरानी पीढ़ी ने भी इसका उपयोग करना शुरू कर दिया।

इंटरनेट ने हिंदी को प्रकाशकों एवं संपादकों के चंगुल से मुक्त कराने में अमूल्य योगदान दिया। अब इंटरनेट पर कोई भी अपना ब्लॉग बनाकर या सोशल मीडिया पर अपनी रचनाएं, अपने उद्गार व्यक्त कर सकता है।

प्रारंभिक दौर में असल समस्या हिंदी फोंट की आई थी। हिंदी की विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में अलग-अलग हिंदी फोंट प्रयोग में लाए जाते थे और वे लिंक के माध्यम से पहले फोंट डाउनलोड करने का अनुरोध करते थे ताकि उनकी सामग्री को पढ़ा जा सके। यानी जितनी तरह की पत्र-पत्रिकाएं, उतने ही प्रकार के हिंदी फोंट। हिंदी का कोई एक वैश्विक मानक फोंट नहीं था कि सभी उसका प्रयोग करते। और तो और फोंट के साथ-साथ विभिन्न प्रकार के की-बोर्ड की भी अराजकता थी।

हम जानते हैं कि कंप्यूटर का विकास उन देशों में हुआ, जिनकी भाषा रोमनलिपि में लिखी हुई अंग्रेजी भाषा है। उन्होंने कंप्यूटर की भाषा (0 और 1) को आस्की-7 (ASCII & American Standard Code for Information Interchange) कोडिंग प्रणाली में तैयार किया था और उसी के अनुसार की-बोर्ड पर अक्षर भी सेट किए। परन्तु जब कंप्यूटर भारत में आया तो यहां उस पर हिंदी में काम करने की मांग बढ़ने लगी। इसे देखते हुए भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, कानपुर के वैज्ञानिकों ने इस्की-8 (ISCI & Indian Standard Code for Information Interchange) कोडिंग प्रणाली का विकास किया। इस प्रणाली को विकसित करते समय वैज्ञानिकों ने इस बात को ध्यान में रखा कि हिंदी के लिए निर्धारित की जाने वाली कोडिंग प्रणाली में रोमनलिपि के समावेश की भी सुविधा हो और रोमनलिपि के लिए विकसित क्वेटी (iQWERTY) की-बोर्ड में ही हिंदी में टाइप करने की सुविधा हो। हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषाओं के लिए वैज्ञानिकों ने अलग से कोई की-बोर्ड की सुविधा उपलब्ध नहीं कराई।

खैर, भारत में तो हिंदी प्रेमी अंग्रेजी के की-बोर्ड पर हिंदी वर्णों के स्टीकर चिपकाकर किसी प्रकार हिंदी में टाइप कर लेते थे, परन्तु जिस उद्देश्य से इंटरनेट पर हिंदी पत्र-पत्रिकाओं को डाला जा रहा था, वह तो पूरा हो ही नहीं

रहा था। मात्र फॉन्ट डाउनलोड करके सामग्री को पढ़ना ही तो इसका उद्देश्य नहीं था, बल्कि प्रयोक्ता उसे जब तक एडिट न कर सके या उस पर अपनी टिप्पणी न दे सके, तब तक उद्देश्य अपूर्ण ही था। विश्व के किसी दूसरे कोने में बैठा हिंदी प्रेमी व्यक्ति तो यह नहीं कर पाता, क्योंकि वहां शायद ही मार्केट में हिंदी वर्णों का स्टीकर उपलब्ध हो। इसे हमारे भारत में रहने वाले हिंदी प्रेमियों की विलक्षण मेधा शक्ति ही कहा जाए कि वे ऐन-केन-प्रकरेण अंग्रेजी के की-बोर्ड पर हिंदी में काम कर रहे थे। इन सारी समस्याओं का एकमात्र हल यही था कि हिंदी और भारतीय भाषाओं के लिए भी कोई एक मानक फॉन्ट हो, जिससे बिना फॉन्ट को डाउनलोड किए हिंदी सामग्री को आसानी से पढ़ा जा सके। इसे देखते हुए वैज्ञानिकों ने हिंदी यूनिकोड विकसित किया। यूनिकोड आ जाने के बाद हिंदी के सभी समाचार पत्रों-पत्रिकाओं ने अपनी-अपनी सामग्रियां यूनिकोड में परिवर्तित कर लीं। अब विश्व के किसी कोने में बैठा व्यक्ति हिंदी की किसी भी साइट को बिना किसी अतिरिक्त फॉन्ट को डाउनलोड किए आसानी से सर्च कर सकता है, पढ़ सकता है और उस पर अपनी टिप्पणियां दे सकता है। यहां इस बात का उल्लेख करना समीचीन होगा कि यूनिकोड आने के बाद हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं को उसी की-बोर्ड के माध्यम से सर्च किया जा सकता है और उसे एडिट भी किया जा सकता है।

गूगल-केपीएमजी रिसर्च, सेंसस इंडिया और आईआरएस की सर्वे रिपोर्ट को मानें तो साल 2021 में हिंदी में इंटरनेट उपयोग करने वाले अंग्रेजी में इंटरनेट इस्तेमाल करने वालों से अधिक हो जाएंगे। एक अनुमान के मुताबिक 20.1 करोड़ लोग हिंदी का उपयोग करने लगेंगे। इंटरनेट पर भारतीय उपभोक्ता हिंदी में इंटरनेट सर्फिंग को पसंद कर रहे हैं। इंटरनेट पर हिंदी ब्लॉगर्स की संख्या एक लाख से भी ऊपर पहुंच गई है। आज इंटरनेट पर हिंदी साहित्य से संबंधित लगभग 70 ई-पत्रिकाएं हिंदी में उपलब्ध हैं। 15 से अधिक हिंदी के सर्च इंजन हैं, जो किसी भी वेबसाइट का मिनटों में हिंदी अनुवाद उपलब्ध करा सकते हैं। भारत के लगभग सभी सरकारी संगठनों की वेबसाइट हिंदी यूनिकोड में उपलब्ध हैं। भारत के लगभग सभी हिंदी दैनिक समाचार पत्र और पत्रिकाएं हिंदी यूनिकोड में उपलब्ध हैं। सबसे उत्साहजनक बात है कि सोशल मीडिया- फेसबुक, व्हाट्सएप, ट्विटर आदि ने भी हिंदी को हाथों-हाथ लिया है। राजनेता हो या अभिनेता, सामाजिक कार्यकर्ता हो या खिलाड़ी सभी सोशल मीडिया का भरपूर उपयोग कर रहे हैं।

हाल ही में हमने हिंदी का प्रयोग दो ऐसी जगह देखा, जिसके बारे में पहले हम सोच भी नहीं सकते थे, वे हैं- डीटीएच और क्रिकेट का स्कोर-बोर्ड। डीटीएच ने किसी भी चैनल के हिंदी अनुवाद की सुविधा दे रखी है और क्रिकेट के स्कोर-बोर्ड पर हम हिंदी में स्कोर देख सकते हैं। डिस्कवरी, नेशनल ज्योग्राफिकल एवं एनीमल प्लानेट जैसे चैनल भी हिंदी में हमारा ज्ञानवर्धन कर रहे हैं। हालांकि इंटरनेट पर हिंदी फल-फूल रही है, फिर भी कुछ स्वयं भू हिंदी साहित्यकार इंटरनेट पर हिंदी की सामग्री की गुणवत्ता पर असंतोष व्यक्त कर रहे हैं, उन्हें नजरअंदाज करने की आवश्यकता है। देखा जाए तो हिंदी ने साइबर स्पेस में मजबूती से अपना स्थान बना लिया है। वह अंग्रेजी से भी कहीं ज्यादा तेजी से बढ़ रही है। Statista.com के दिए गए आंकड़ों के अनुसार 2020 में भारत में इंटरनेट के लगभग 700 मिलियन उपयोगकर्ता थे। जिस तरह से भारत में इंटरनेट के उपयोगकर्ता की संख्या बढ़ रही है उसे देखते हुए यह अनुमान लगाया गया है कि वर्ष 2025 में यह संख्या 974 मिलियन के करीब पहुंच जाएगी, दक्षिण एशियाई देश के लिए इंटरनेट सेवाओं में एक बड़ी बाजार क्षमता का संकेत देता है। गूगल के अनुसार भारत में इंटरनेट का इस्तेमाल सलाना 94 फीसदी की दर से बढ़ रहा है। हर पांच में से एक भारतीय हिंदी में सर्च करना पसंद कर रहा है। इसके मुकाबले देश में इंटरनेट पर अंग्रेजी सिर्फ 14 प्रतिशत की दर से बढ़ रही है।

माननीय प्रधानमंत्री जी के डिजिटल इंडिया के बारे में बड़ी कंपनियां यह अच्छी तरह जानती हैं कि इसका विस्तार छोटे शहरों और गांवों में होना है तथा आने वाले समय में लोग इंटरनेट का इस्तेमाल सबसे ज्यादा मोबाइल पर ही करेंगे। इसको देखते हुए गूगल, माइक्रोसॉफ्ट एवं एप्पल जैसी बड़ी कंपनियां हिंदी के एप्स को काफी बढ़ावा दे रही हैं। हिंदी का प्रयोग करने वालों में अपनी पैठ बनाने की होड़ में गूगल, माइक्रोसॉफ्ट सबसे अग्रणी साबित हो रही हैं। अब तो कई सेवाप्रदाताओं ने हिंदी में बोलकर टाइपिंग की भी सुविधा उपलब्ध करा दी है। गूगल, माइक्रोसॉफ्ट आदि के ट्रांसलेटर ऐप के माध्यम से किसी भी भाषा को हिंदी अथवा हिंदी से किसी भी भाषा में अनुवाद किया जा सकता है। इस तरह हम कह सकते हैं कि हिंदी ने इंटरनेट पर धीमे-धीमे ही सही पर अपना सिक्का जमा लिया है।

—श्याम बाबू शर्मा

वरिष्ठ अनुवादक, पूर्वोत्तर रेलवे, गोरखपुर



तृप्ति का सफ़र

रेल यात्राएं तो मैंने कई की हैं, छोटी, बड़ी, लम्बी एवं बहुत लम्बी, पर यह कहते हैं ना कि प्रवास सुखद वही जिसमें प्रमाद नहीं। अतः यदि वर्तमान में की हुई कुछ रेल यात्राओं पर नजर डालूं तो मुंबई से पुणे को अगस्त-2018 में की गई यात्रा मुझे विशेषतया स्मरणीय रहेगी, जो बारिश के मौसम में की गई थी। यद्यपि यात्रा तो मात्र चार घंटे की थी, पर उसने चार युगों का आनंद प्रदान किया। रिमझिम बारिश कलकल झरने, छलछल बहती नदी लुकाछिपी खेलती सुरंगों एवं पहाड़ों के ऊपर तथा नीचे खाईयों में उमड़ते-धुमड़ते बादलों के साथ-साथ रेलवे में मूलभूत यात्री सुविधाओं की विकास यात्रा के साक्ष्यों का अवलोकन तो सोने पे सुहागा था।

इस चार घंटे की यात्रा ने एक बार तो पुनः बचपन में पहुंचा दिया और याद आ गया वह लम्हा जब पूरे परिवार के साथ पहली बार देहरादून एक्सप्रेस में रतलाम से मुंबई तक का सफर किया था। मैं और दीदी जो मुझे मात्र दो बरस ही बड़ी थीं, दोनों आमने सामने खिड़कियों वाली सीट को कब्जा कर बैठ गए कॉपी पेन हाथ में कि जितने स्टेशन आएंगे सबके नाम लिखेंगे पर वो उत्साह तीन स्टेशन के बाद ही रूप परिवर्तन कर भूख में बदल गया था जबकि ट्रेन में बैठने के पहले ही स्टेशन वेटिंगरूम में रतलाम के गरमा-गरम कचोरी समोसे, खाकर ट्रेन में बैठे थे भूख में बदलने का कारण भी बड़ा विचित्र था। सामने से एक ब्रेड कटलेट बेचने वाला आवाज़ लगाते हुए गुज़रा था। ट्रेन में तो वैसे भी भूख ज्यादा ही लगती है और यदि सामने से कोई ललचाने वाली गरमा-गरम नमकीन चटाकेदार वस्तु लेकर निकले तब तो नियंत्रण रख पाना लगभग असंभव सा ही हो जाता है। क्या खूब दिन थे वह! हर दो घंटे में भूख लग जाती थी और अब तो हवा की गहरी सांस भी अंदर ले लो तो पेट भर जाने का अहसास हो जाता है। खैर! उस यात्रा की बात फिर कभी। अभी तो बात चली थी इस चार घंटे की ताज़ातरीन यात्रा की, जो बारिश के सुहावने मौसम में की गई थी।

छत्रपति शिवाजी महाराज टर्मिनस पर पहुंचते ही सबसे पहले प्रवेश द्वार पर लगे बड़े से डिजिटल नोटिस बोर्ड

पर नज़र गई जिसमें सभी ट्रेनों के प्रस्थान का समय एवं प्लेटफार्म की सूचना लगी थी। मुंह से निकला वाह! प्रवेश द्वार पर ही सूचना मिल गई, पर यह क्या! मेरी ट्रेन तो प्लेटफॉर्म अठारह से जाएगी अर्थात् सबसे दूर वाले प्लेटफॉर्म से यानि कि तकरीबन पांच सौ मीटर चलना पड़ेगा। चूंकि मेरे पास सामान कम था अतः मुझे तो उतना चलने में कोई दिक्कत नहीं थी, पर मुझे लगा कि बुजुर्गों व वरिष्ठ नागरिकों का क्या हाल होगा! क्योंकि मैं स्वयं दस वर्ष पूर्व एक बार ऐसी समस्या से जूझ चुका था। तब अपनी दादी मां के लिए व्हील चेयर हेतु मुझे काफी भटकना पड़ा था। तभी मेरी नज़र एक मोटरकार्ट पर पड़ी जिसमें चार पांच बुर्जुगवार बैठकर सामान सहित जा रहे थे रेलवे द्वारा प्रदत्त। इस सुविधा पर दिल बाग-बाग हो गया। रेलवे में ऐसे कई सुखद परिवर्तन हुए हैं जिनमें यात्रियों को प्रदत्त मूलभूत सुविधाओं में काफी विकास हुआ। अब तो लगभग सभी बड़े स्टेशनों पर विद्युत-चालित सीढ़ियां यानि कि एस्केलेटर भी लगा दिये गये हैं। लिफ्ट भी कई स्टेशनों पर ऊपरी पुलों के साथ-साथ लगा दी गई हैं। यात्रा की शुरुआत एक सकारात्मक सुखद अनुभूति से हुई।

छत्रपति शिवाजी महाराज टर्मिनस स्टेशन पर मौसम खुशनुमा था आसमान बादलों से आच्छादित था और आरक्षण भी चेयरकार ए.सी. में कन्फर्म था। हालांकि मुझे लगा कि ऐसे मौसम में तो स्लीपर क्लास में ही यात्रा करनी चाहिए थी क्योंकि वहीं आप प्राकृतिक हवा के नजदीक होते हैं। सूर्यनारायण भगवान पिछले तीन दिनों से ओझल थे और आज तो बादल और अधिक श्यामवर्णी नज़र आ रहे थे। अपना सामान ऊपर की लगेज सीट पर करीने से लगाकर मैं बैठ गया। चेयरकार में अगर विंडोसीट मिल जाए तो लगता है जैसे ओलम्पिक में गोल्ड मेडल हाथ लग गया हो। बस कुछ यही हाल मेरा भी था। सामान वगैरह सेट कर खिड़की के पास विंडो सीट पर बैठे यात्री दार्शनिक की मुद्रा में बाहर देखते हुए स्वयं को अरस्तु या सुकरात से कम नहीं समझ रहे थे। हालांकि मैं भी उन्हीं में से एक था।

गाड़ी चलने में कुछ वक्त था। मैंने सोचा बाद में तो बैठना ही है चलो, नीचे उतरकर कुछ चहलकदमी की



जाएं। नीचे उतर कर खड़ा हुआ ही था कि डिब्बे के समक्ष टी.टी. महोदय का अवतरण हुआ। उनके अवतरित होते ही उनके चारों ओर यात्रियों का एक हुजूम-सा जमा हो गया। कोई अपनी वेटलिस्ट सीट की कन्फर्म हो जाने की जानकारी चाह रहा था, कोई खाली सीट की गुजारिश कर रहा था। तो कोई अपनी अलग-अलग जगह की सीटों को एक जगह करने की गुहार लगा रहा था। टी.टी. महोदय ने अपना चार्ट उनके आगे कर दिया कि भाई, देख लो बिल्कुल जगह नहीं है। पर लोग थे कि छोड़ने का नाम नहीं ले रहे थे। रेलवे स्टेशनों पर इस तरह के नजारें आम हैं जबकि अब तो रेलवे द्वारा आरक्षण पट्टिका पर प्रस्थान के पूर्व सभी ट्रेनों के रिजर्वेशन चार्ट लगाए जाते हैं, जिनमें देखकर स्वयं ही अपनी वेंटिंग सीट आबंटन एवं खाली सीट की उपलब्धता देखी जा सकती है। यहां तक कि एक दिन पहले तत्काल एवं गाड़ी छूटने के पन्द्रह मिनट पहले तक खाली रह गयी सीटों की करंट बुकिंग की व्यवस्था भी रेलवे द्वारा यात्रियों की सुविधा के लिए मुहैया करवाई गई है। पर इतनी प्रगति के बाद भी ये लोग उन व्यवस्थाओं के बदले सहज उपलब्ध टी.टी. महोदय से ये सब जानकारीयां चाह रहे थे। टी.टी. महोदय भी अनुभवी थे। वें पांच-सात सेकेंड के बाद पांच-सात कदम चल देते थे। भीड़ उनके पीछे-पीछे चलती थी। मुझे अपने बच्चे के स्कूल का एक फुटबॉल मैच याद आ गया, जहां दोनों गोलकीपर को छोड़कर सभी बच्चे फुटबॉल के पीछे दौड़ लगा रहे थे, न कोई सेंटर बैक, न कोई मिडफिल्डर, न कोई फुल बेक। सब बच्चे एक जगह इकट्ठे यानि जहां फुटबॉल वहां बीस बच्चे, बाकी का पूरा मैदान खाली। और अगर गलती से किसी बच्चे द्वारा फुटबॉल पर किक लग गई और फुटबॉल दूर चली गई तो पूरा झुंड मधुमक्खी के झुंड की तरह उसके पीछे और यह देख सभी दर्शक हंस-हंस के बेहाल। उन बच्चों का गोल (ध्यान) तो गोल था पर इस भीड़ का गोल (ध्यान) सीट पर था। टी.टी. महोदय के पीछे लगी इस भीड़ में कितनों को सफलता मिली ये देखने का संयोग प्राप्त नहीं हुआ क्योंकि टी.टी. महोदय पांच-सात कदम बढ़ाते-बढ़ाते पूरे हुजूम के साथ डिब्बे से आगे जा चुके थे। खैर, गाड़ी समय से चली।

ट्रेन का पहला हॉल्ट (पड़ाव) था दादर। आधी भरी गाड़ी जो छत्रपति शिवाजी महाराज टर्मिनस से चली थी,

वह अपने अन्य यात्रियों का स्वागत करने को तैयार थी। पर यात्री थे कि मानो हड़बड़ी की पराकाष्ठा को परिलक्षित करने की होड़ में लगे थे। आधे यात्री आगे के दरवाजे से चढ़े और आधे पीछे के दरवाजे से। मजे की बात यह थी कि कुछ लोग, जिनकी सीट पीछे की ओर थी, वें आगे से चढ़े और कुछ लोग, जिनकी सीट आगे की ओर थी, वें पीछे से चढ़े और बीच कोच में ट्रैफिक जाम लगाकर धक्का-मुक्की सी करने लगे। कुछ लोग तैश में आकर कर्ण भेदी स्वर में कर्णकटू वाक्यों का आदान-प्रदान कर रहे थे। उनके स्वर एवं वाक्यों की गर्मी माहौल को गर्म कर रही थी। इस गहमागहमी व आक्रोश के माहौल में मुझे बचपन में पढ़ी वह कहानी याद आ गई जिसमें दो बकरियां एक संकरे लेकिन ऊंचे पुल पर आमने-सामने आ जाती हैं। दोनों पहले तो अभिमान दिखाती हैं पर बाद में धीरता व संयम दिखाते हुए एक नीचे बैठ जाती है व दूसरी उसके ऊपर से निकल जाती है। इस प्रकार दोनों न सिर्फ अपनी, बल्कि दूसरे की भी जान बचाती है बल्कि अपनी मंजिल पर भी पहुंच जाती है। जो बकरी नीचे बैठ जाती है वह पराजय का नहीं, बल्कि बड़प्पन व समझदारी का पाठ पढ़ाती है, पर मुझे लगा कि ये लोग जो इतने आक्रोशित हो रहे थे उनके पाठ्यक्रम में शायद वो पाठ था ही नहीं, वरना ये सभी अब तक दूसरों को प्राथमिकता देने के पश्चात् अपना सामान लेकर अपनी-अपनी सीटों पर जम गए होते। मुझे लगा कि शायद ये लड़ाई अंतहीन होगी, पर थोड़ी देर में तिरछे-मिरछे होकर एक-दूसरे को खा जाने वाली सी नजरे तरेरते हुए सब अपनी-अपनी जगह पहुंच ही गए।

मैंने चारों ओर नज़र घुमाकर जायजा लिया, ठीक उसी प्रकार जैसे सचिन तेंदुलकर बैटिंग करते हुए मैदान का मुआयना कर रहे हों। मेरे ठीक आगे की सीट पर एक सज्जन दूसरे सहयात्री से विश्व शांति पर तथा नेल्सन मंडेला व मलाला यूसूफज़ई को मिले नोबेल शांति पुरस्कार पर चर्चा कर रहे थे। ध्यान से देखा तो पाया कि ये वही सज्जन थे जो कुछ देर पहले पूरे डिब्बे की शांति भंग किए हुए थे। मन में आया कि इनसे पूछा जाए कि “हे विश्व शांति कपोत, क्या आपने महात्मा गांधी का नाम सुना है जो विचार नहीं बल्कि आचार में भी उन बातों को उतराते थे जिसे दूसरे नितांत असंभव समझते थे।” फिर सोचा छोड़ो! वरना अभी जो शांति कोच में बमुश्किल पसरी हैं। इन



“शांतिदूत” की वजह से दोबारा अशांति में न बदल जाए।

मैंने अपना मुआयना जारी रखा। मेरे सहयात्रियों में कई प्रजाति के लोग नजर आ रहे थे यथा निद्रा-विहारी यानि जिन्होंने गाड़ी के चलते ही निद्रा-विहार करने के लिए जो आंखें बंद की तो गंतव्य पर पहुंचकर ही खोली।

कुछ थे मोबाइल-संचारी अर्थात वे अपने कर्ण श्रवण यंत्र लगाए मोबाइल पर संचार करने में ऐसे मशगूल थे मानो नील आर्मस्ट्रांग की तरह अकेले ही चन्द्रमा की सैर पर हो। दूसरे सहयात्रियों से कोई मतलब ही नहीं। इन्हें ये नहीं पता कि कुछ दिनों के पश्चात् इनके ये कर्ण और चक्षु इन्हें आंख व कानों के डॉक्टर के पास ले जाकर इनकी शिकायत करेंगे कि इन्होंने अपने मोबाइल द्वारा उन्हें कितना सताया है।

कुछ प्रीतम-प्यारी जोड़े थे, जो आपस में बातों में इस तरह डूबे हुए थे मानो घर पहुंचकर उन्हें सोहनी-महिवाल की तरह नदी के दो किनारों पर फेंक दिया जाएगा।

पुस्तक-निहारी लोग मात्र तीन ही नजर आ रहे थे। जिनमें से एक श्रीमान ‘स्टारडस्ट’ को निहार रहे थे और दूसरे महोदय किसी मोटे से अंग्रेजी उपन्यास का अवलोकन कर रहे थे। मात्र एक सज्जन ऐसे थे जो कि हिंदी पुस्तक में डूबे हुए थे। ये आश्चर्यजनक बात है कि पूर्व की यात्राओं में जहां तकरीबन चालीस से पचास प्रतिशत लोग पुस्तकें लेकर चलते थे, अब उनमें काफी कमी आ गई है क्योंकि सबके पास गोद लिया बच्चा अर्थात मोबाइल फोन जो आ गया है।

कुछ लैपटॉप-जूझारी लोग अपने लैपटॉप से इस कदर जूझ रहे थे मानो अभी काम न किया तो पूना पहुंचते-पहुंचते प्रलय ही आ जाएगा। पर फिर समझ आ गया कि प्रलय तो उनका बॉस था (जो बीच-बीच में फोन पर ही आकर उनकी खबर ले रहा था और जिसे वो बीच-बीच में रिपोर्ट दे रहे थे।) अब समझ आया कि बचपन में जिस बाबा के नाम से बच्चे को डराते हैं वह और कोई नहीं बल्कि उनका फ्यूचर बॉस ही होता है।

इन सब महाविभूतियों के बीच मेरा ध्यान एक नौ-दस वर्ष की बालिका पर गया जो अपने रोते हुए छोटे भाई को, जिसकी आयु तकरीबन डेढ़ से दो वर्ष होगी, गोद में लिए बैठी थी और इतने वात्सल्य के साथ चुप करा रही थी मानो वही उसकी मां हो। बड़ी बहन वैसे भी मातृतुल्य ही होती है पर यहाँ विशेषता यह थी कि एक तो वह बच्ची स्वयं बहुत छोटी थी और दूसरा, उन बच्चों की मां बिल्कुल

पासवाली सीट पर ही बैठी थी। ध्यान से देखा तो लगा कि उनकी मां स्वास्थ्य को लेकर कुछ परेशान सी लग रही थी। शायद उसे कुछ बुखार सा था। उस बच्ची ने मां को बिल्कुल निश्चित-सा कर रखा था। बच्ची उस छोटे बच्चे से बड़े दुलार से कह रही थी “मेरा भैया.. सबसे अच्छा” “खिलौने से कौन खेलेगा। मेरा राजा भैया”। मैंने सोचा इस नौ दस वर्ष की बच्ची को इतनी समझ कहां से आ गई? पर फिर महसूस हुआ कि प्रकृति ने स्त्री को कई विशेष गुणों से नवाजा है जिनमें से एक वात्सल्य है। शायद इसकी वजह यह है कि प्रकृति खुद भी एक स्त्री ही तो है जो सबका बड़े वात्सल्य से पालन पोषण करती है तथा धूप, हवा, पानी, निःशुल्क प्रदान करती है फिर चाहे वह इंसान हो या जीव-जंतु, पेड़ पौधे या चर-अचर। मैंने मन ही मन उस बच्ची को प्रणाम किया और तुरन्त निश्चय किया कि घर पहुंचकर डाईनिंग टेबल पर संपूर्ण परिवार जब भोजन के लिए बैठेगा तो इस घटना का जिक्र जरूर करूंगा।

दादर के बाद अगला पड़ाव था ठाणे। मुंबई उपनगर के यात्री, जो छत्रपति शिवाजी महाराज टर्मिनस तक नहीं आ सकते हैं, वे अन्य उपनगरीय स्टेशनों से चढ़ते हैं जहां उस ट्रेन को ऐसे ही यात्रियों की सुविधा के लिए हॉल्ट दिया जाता है। यहां पुनः दादर वाला माहौल उपस्थित तो हुआ पर उससे कुछ कम, क्योंकि यात्री भी कम ही थे। बैठे-बैठे अचानक विचार कौंधा कि कितना अच्छा हो यदि कोच इंडिकेटर बोर्ड पर कोच नम्बर के साथ-साथ सीट नम्बर 1-72 या 72-1 इंडिकेशन का डिस्प्ले भी आ जाए तो यात्री यह प्लान कर पाएंगे कि उन्हें आगे के दरवाजे से चढ़ना है या पीछे से।

कल्याण होते हुए ट्रेन कर्जत में रूकी। यहां कुछ अधिक समय तक ट्रेन रूकी रही क्योंकि आगे घाट सेक्शन था एवं लगातार चढ़ाई होने की वजह से एक अतिरिक्त रेल इंजन लगाया जा रहा था जिसे बेंकर कहते हैं और जो पुश बैक का कार्य करता है। डिब्बे के भीतर आराम से बैठे यात्रियों को शायद ही ये ख्याल आता होगा कि रेलवे उनकी सुविधा के साथ-साथ संरक्षा व सुरक्षा के लिए कितने उपाय करती है।

कर्जत तक गाड़ी पहुंचते वक्त हल्की-हल्की बूदाबांदी शुरू हो चुकी थी जो कर्जत से गाड़ी चलने के पहले तेज फुहारों में बदल गई थी। कल्याण से कर्जत तक तो सपाट ट्रैक था लेकिन कर्जत के पश्चात् घाट सेक्शन चालू

होता है। जब गाड़ी घाट सेक्शन में पहुंची तब रिमझिम बारिश अपने पूरे शबाब पर थी। यानि कि अंग्रेजी के कुत्ते बिल्लियों वाली (Raining Cats & Dogs)। हाथ बाहर निकलते ही इस तेजी से बारिश की बूंदें टकराती थीं जैसे किसी ने सुई चुभाई हो। मन भी कितना चंचल है! सुई याद आते ही मन पुनः पहुंच गया बचपन में और याद आ गई नीमच रेलवे अस्पताल की सिस्टर ग्लेडरीज जिसे अगर बाजार में भी कभी सब्जी खरीदते हुए देख लेते थे तो बांहों में तीखी चुभन उठ जाया करती थी। क्योंकि उन्हें देखते ही आंखों के आगे झिलमिला उठता था वह उनका छोटी सी सफेद रंग की शीशी उठाना, वह खौलते पानी में पड़ी हुई कई लम्बी-लम्बी स्टील सुइयों में से एक लम्बी सुई उठाना, वह इंजेक्शन भरना, फिर एक छोटी-सी तुरी (अर्थात धार) मारकर इंजेक्शन लगाने के लिए तैयार करना और फिर मुस्कुराते हुए कनखियों से हमारे नन्हें हाथों की ओर देखना। इंजेक्शन से ज़्यादा तो ये पूरी प्रक्रिया दहशत भर देती थी नीमच कॉलोनी के समस्त बच्चों में तो जितना उनका डर था उतना तो शायद चम्बल में फूलनदेवी का भी नहीं रहा होगा शोले में जितना आतंक गब्बर के नाम का था, उतना ही आतंक सिस्टर ग्लेडरीज का नीमच कॉलोनी के बाल गोपालो में था जिनके नाम से बच्चे डराए एवं सुलाये जाते थे कि शैतानी बंद करो और चुपचाप सो जाओ नहीं तो कल सिस्टर ग्लेडरीज को बुला लेंगे। उम्र के इस पड़ाव पर मुझे फिर से एक बार झुरझुरी सी महसूस हुई। मैंने इंजेक्शन के उस भयावह ख्याल को दिमाग से झटक कर बाहर निकाला तथा बाहर नज़रें दौड़ाई।

पग पग पर बहते बरसाती झरने बहुत लुभावने लग रहे थे और ट्रैक के इतने पास थे कि सर बाहर निकालो तो 'हर-हर गंगे कहने भर की कमी रह जाए (सर पर पानी डलकर मस्तक-स्नान जो हो जाएगा)। हाथ झरने को छूने के लिए बाहर निकालने का सोचा ही था कि बचपन में माता-पिता द्वारा दी गई चेतावनी याद आई कि चलती ट्रेन या बस में खिड़की के बाहर हाथ नहीं निकालना चाहिए। अतः हाथ तो बाहर नहीं निकाला, बस ख्याल को बाहर का रास्ता दिखा दिया।

कर्जत से ट्रेन निकलते ही टनल याने सुरंगें भी शुरू हो जाती हैं जो दिन में भी रात्रि का आभास करवाती हैं। एक के साथ लगी दूसरी टनल इस तरह आ रही थी मानो एक-दूसरे से कह रही हों तू चल मैं आई' और ट्रेन भी इस तेजी से

एक के बाद दूसरी टनल में घुसती जाती थी मानो बारिश की फुहारों के साथ लुकाछिपी खेल रही हो।

पहाड़ों के ऊपर, नज़र के समानान्तर एवं नीचे खाईयों में उमड़ते घुमड़ते बादलों को देखकर कल्पनाएं कहां-कहां उड़ान ले रही थी। नीचे खाईयों में लहराते रूई के फाहों के समान एकदम सफेद झक्क बादल देखकर एक फिल्मी गीत याद आने लगा "आज मैं ऊपर -आसमा नीचे" और ऊपर पहाड़ों पर पंख रूपी बादल देखकर याद आने लगी कक्षा दस में हिंदी बाल भारती में पढ़ी हुई कविता 'पर्वत प्रदेश में पावस' की वह लाईनें

**"उड़ गया, अचानक लो, भूधर,
रव-शेष रह गए हैं निर्झर-
फड़का अपार वारिद के पर।**

है टूट पड़ा भू पर अम्बर॥"

कर्जत से लोनावाला तक मैं एक क्षण को भी चैन से नहीं बैठा। कभी बांये दरवाजे पर तो कभी दांये दरवाजे पर। एक बालसुलभ चपलता और कौतुहलता मेरे अंदर संचार लेती रही और मैं मुग्धमन बसु, प्रकृति को निहारता रहा। मनमोहक मौसम, नयनाभिराम नज़ारे, विहंगम दृश्य, बारिश की फुहारें, सौंधी गीली मिट्टी की महक, त्रिबिध (शीतल, मंद, सुगंधित) ब्यार बस ऐसा लग रहा था कि प्रकृति के सुकुमार कवि सुमित्रानन्दन पंत मेरे साथ बगल थाली सीट पर ही बैठे हुए यात्रा कर रहे हैं और उनकी कवि हृदय आत्मा मेरे अन्दर उतर मेरे अन्तः को भिगो रही है और प्रेरित कर रही है कुछ वैसा ही लिखने के लिए जैसा उन्होंने लिखा था।

**"पावस ऋतु थी, पर्वत प्रदेश,
पल-पल परिवर्तित प्रकृति-वेश।"**

इस बीच ट्रेन रूकी। मैंने देखा तो मंकी हिल स्टेशन था बहुत ही दिलकश नज़ारा था। चारों ओर ऊंचे-ऊंचे पहाड़ और उन पर बारिश की फुहारों के बीच खुशी से लहराते झूमते अलमस्त घने हरे भरे वृक्ष। मेंढकों के बोलने की समवेत ध्वनि ऐसे गूंज रही थी मानों संस्कृत विद्यालय के बच्चे मंत्रोच्चार कर रहे हों। मुझे कविश्रेष्ठ तुलसीदास जी का दोहा याद आ गया।

**"पावस ऋतु देखि के धरि कोकिलन मौन,
अब तो दादुर बोलिहें हमरि सुनिहे कौन।"**

अर्थात बारिश ऋतु में कोयल मौन धारण कर लेती है और जब उनसे पूछा जाता है कि क्यों बहना, भरी



गर्मी में बड़ा चहकती फिरती थी, अब चुप क्यों हो, तो कहती है कि पावस ऋतु है अब तो मेंढक बोलेंगे। हमारी कौन सुनेगा? कितना सुंदर संकेत है कि समय को पहचान कर मुंह खोलना चाहिए और इसीलिए एक कहावत भी प्रचलित हुई “बरसाती मेंढक” ऐसे लोगों के लिए जो लगातार मेहनत नहीं करते बल्कि ऐन वक्त पर अपनी उपस्थिति दर्ज कराने की व श्रेय लेने की कोशिश करते हैं।

अब खंडाला होते हुए ट्रेन लोनावाला पहुंच रही थी। लोनावाला स्टेशन पर उतर कर चहलकदमी करने की ठानी थी। स्टेशन पर उतरते ही चिक्की-चिक्की की आवाजों ने मेरा ध्यान आकर्षित किया। लोनावाला की चिक्की बहुत प्रसिद्ध है तथा अनेक प्रकार के स्वादों में आती है जैसे तिल की, मुंगफली की, चने की दाल की इत्यादि। वड़ापाव की खुशबू भी फिज़ाओं में तैर रही थी पर मैंने चिक्की को तवज्जो देते हुए कुछ पैकेट खरीदे ताकि घर पहुंचकर उनका लुत्फ उठाया जा सके। लोनावाला स्टेशन पर बैंकर इंजन जो कर्जत में पुश बैक के लिए लगाया गया था, को ट्रेन से अलग किया गया।

लोनावाला के बाद घाट सेक्शन अर्थात् पहाड़ एवं खाईयां तो खत्म हो गए, पर मौसम अब भी बहुत सुहावना था। हवा में एक तीखी सी ठंडक थी। जहां तक नज़रें जा रही थीं, बस हरा ही हरा नज़र आ रहा था। ऐसा लग रहा था मानो धरती हरी साड़ी पहनकर तीज का त्योहार मना रही हो।

कामशेत स्टेशन पर ट्रेन के साथ-साथ बहती नदी को देखकर मन प्रफुल्लित हो उठा। कुछ ही तो नदियां बची हैं जिनमें सालभर पानी रहता है, वरना अधिकांश नदियां तो सूख चुकी हैं और नदियों में पानी दिख जाने पर ऐसा लगता है मानो राजस्थान में किसी रेत के टीले पर बर्फ जमी देख ली हो। नदी में पानी के वेग को देखकर ऐसा लगा मानो वह ट्रेन की गति को देखकर जोश में आकर ट्रेन के साथ रेस लगा रही हो। छोटे-छोटे नदी, नाले, जो नदी में आकर मिल रहे थे, मानो नदी का जोश बढ़ाते हुए चिल्ला रहे हों “दीदी, दीदी, कमऑन दीदी” और लहराती हुई दीदी हौंसला अफज़ाई का बल पाकर और वेग पकड़ रही हो।

नज़ारा कुछ देखा-देखा सा लग रहा था, अचानक याद आया टेलिविजन पर प्रसारित होने वाला देश की अनेकता

में एकता एवं अखंडता पर बना गीत, जो नब्बे के दशक की शुरूआत में बेहद लोकप्रिय था।

“मिले सुर मेरा तुम्हारा.. तो सुर बने हमारा”।

उसमें फिल्म अभिनेत्री तनुजा महाराष्ट्र का प्रतिनिधित्व करते हुए गाती है

“माँझा तुमच्या जुलता तारा, मधुर सुरांच्या बरसती धारा”

वह शायद इसी लोकेशन पर फिल्माया गया होगा। उस देश प्रेम को दर्शाते हुए विज्ञापन गीत की तरह हमारी ट्रेन भी तो एक गीत की तरह विविध राज्यों के नागरिकों को अलग-अलग सुरों के रूप में अपने अन्दर समाहित करते हुए “सुर बने हमारा” गाते हुए पूरे देश में घुमती है।

पूना में उतरते वक्त एक सुखद तृप्ति का एहसास था। मन प्रफुल्लित था, कई बार मनचाहा कार्य पूरा हो जाने के बाद जो तृप्ति का अहसास होता है, बस वही तृप्ति। क्यों थीं यह तृप्ति? उत्तर भी तुरंत ही मस्तिष्क में कौंधा। ये तृप्ति इसलिए थी कि ट्रेन के इस सफर में मैंने न सिर्फ प्राकृतिक सुंदरता जैसे कि रिमझिम फुहारे, कलकल झरने, छलछल नदी, छुपाछुपी टनल, ऊंचे उतंग पहाड़ और उन पर उमड़ते-घुमड़ते बादल देखे थे, बल्कि सामाजिक सुंदरता अर्थात् रेलवे की यात्री सुविधाओं के प्रगति के साक्ष्य यथा बड़े-बड़े डिजिटल साईन बोर्ड, वाटर वैंडिंग मशीन, वरिष्ठ नागरिकों के लिए मोटरकार्ट, एस्केलेटर, लिफ्ट इत्यादि भी देखे और इसलिए भी कि उनके प्रति मेरा नज़रिया, आदर, सम्मान एवं प्रशंसावाला था। वरना तो मेरे कई सहयात्री भी इसी लम्हे के भागीदार थे, पर उन्होंने यह अनमोल सुख शायद ही प्राप्त किया हो जो मैंने पाया था और बस तभी ये विचार भी आया कि जीवन के सफर में भी जो कुछ हमें मिला है, मिल रहा है, या मिलेगा उसे प्रफुल्लित मन से, आदर व प्रशंसा के भाव से ग्रहण करें तो जीवन में भी ऐसी ही तृप्ति का अहसास होगा। तृप्ति या संतोष ही तो जीवन को पूर्णता देते हैं, वह दोहा है ना कि-

“गोधन गजधन वाजिधन और रतनधन खान।

जब आवै संतोष धन सब धन धूरि समान॥”

सच ये “रेल-सफर” तृप्ति का सफ़र बनकर क्या कुछ सीखा गया।

सुधीर दुबे ‘अधीर’

उप-मुख्य इंजीनियर (सड़क सुरक्षा) पश्चिम रेलवे



आप निगरानी में हैं

पुलिस विभाग का यह बोर्ड जगह-जगह दिखाई देता है। यदि और परिष्कृत हो, तो “आप सीसीटीवी कैमरे की निगरानी में है”, का बोर्ड दिख जाता है। वैसे हर शादीशुदा मर्द बहुत अच्छी तरह जानता है कि कौन किस की निगरानी में होता है।

फिर भी उन पाठकों के लिए जो अभी भी नहीं समझ सके हों, लगभग हर घर के उस दैनिक वार्तालाप की ओर ध्यान दिलाना चाहूंगा

“अच्छा जी, मैं जा रहा हूँ”

“ठीक है कब आओगे, कितनी दूर तक जा रहे हो? देर होने पर फोन करना।”

फिर यदा-कदा, आपके मोबाइल का ऊपरी तौर पर सरसरी, मगर वस्तुतः पैनी दृष्टि द्वारा अवलोकन! और यदि यारों के साथ एक शाम हो, तो लौटने पर आपसे उस संबंध में शब्दों में यथासंभव सचित्र वर्णन सुनना इस निगरानी के कुछ पहलू हैं। और भी होंगे, मगर इस कहानी के परिप्रेक्ष्य में उनका विशेष महत्व नहीं है। सत्य तो यह है कि आप पर सतत निगरानी रहती है।

बात पिछले वर्ष की है, जब मैं 3 दिन के लिए आस्ट्रेलिया के गोल्ड कोस्ट शहर में गया था। भारत का मेरा मोबाइल नंबर चालू था और व्हाट्सएप तथा वीडियो कॉल के जरिए श्रीमती जी को अपनी कुशलक्षेम देता रहता था। होटल का कमरा हो, या समुद्र तट का नजारा, सभी की फोटो अनुशासित और नियमित रूप से भेजता रहता था।

हम दो लोग थे, मैं और संजय। उस दिन शाम को काफी समय था तो हम गोल्ड कोस्ट का मुख्य समुद्री तट देखने चले गए जो लगभग 30-35 मिनट दूर था। पहले होटल से बस द्वारा और फिर पैदल।

गोल्ड कोस्ट का समुद्र तट बड़ा लंबा है जिसके किनारे गगनचुंबी महंगे-महंगे होटल हैं, नीचे खाने-पीने के विभिन्न रेस्टोरेंट और छोटे-मोटे सुवेनियर (जैसे चाबी का गुच्छा, टी-शर्ट, फ्रिज पर लगने वाले चुंबक आदि) की दुकानें, सभी पर्यटकों से भरी हुई। भारत, चीन, तथा अन्य देशों के पर्यटक भी यहां आते हैं। समुद्र की लहरों पर कुछ लोग

सर्फिंग भी करते हैं तो कुछ केवल पानी में मस्ती करते हैं। एक बहुत ही खुशनुमा एहसास होता है, यहां आने पर।

रेत पर काफी देर तक चलने के बाद मैं और संजय थक गए थे। सोचा कि आइसक्रीम खाई जाए। एक-एक आइसक्रीम खरीदकर निकट की बेंच पर बैठ गए। इसी बीच अंधेरा भी हो चला था। आइसक्रीम खाकर हम वापिस पैदल बस स्टैंड तक आए और फिर बस में बैठकर होटल के स्टॉप पर उतर गए।

“अरे, मेरा मोबाइल लगता है बस में छूट गया” मैं घबरा कर बोला। मेरा फोन मेरी जेब में नहीं था।

बड़ी परेशानी की बात थी। मोबाइल खो जाने का मतलब एक अनजाने देश में संपर्कहीन हो जाना था। मेरी चिंता स्वाभाविक थी।

“सर मैं फोन करके देखता हूँ” संजय बोला

पहले तो फोन लगा नहीं, फिर जिस किसी ने फोन उठाया था, उससे संपर्क हुआ। उसकी अंग्रेजी खास पल्ले नहीं पड़ी, मगर यह पता जरूर चल गया कि मैं अपना फोन आइसक्रीम खाते समय बेंच पर ही छोड़ आया था और वह व्यक्ति उसे अपने साथ लेकर आ गया था। उसका फ्लैट समुद्र तट के आसपास ही था, हालांकि पता कुछ समझ नहीं आया।

फिर क्या था, वापिस बस में बैठ हम दुबारा उसी समुद्र तट के आसपास आ गए। संजय ने मेरे नंबर पर फोन लगाया। उसी व्यक्ति ने उठाया। हमने उसे बताया कि हम ‘बीच’ पर आ चुके हैं मगर उसने वहाँ आने से मना कर दिया।

“आप मेरा पता नोट कर लो, बिल्डिंग में आने के बाद फोन करना, मैं नीचे आ कर दे जाऊंगा” वह बोला

उसकी अंग्रेजी मेरे समझ में फिर नहीं आई, मगर कुछ पता अवश्य लिख लिया।

समुद्र तट के किनारे की उन गगनचुंबी अट्टालिकाओं के पीछे कई 10-11 मंजिल की बिल्डिंग हैं, जिनमें रिहायशी फ्लैट हैं। एक तो रात हो गई थी, दूसरे लोग भी कम नज़र आ रहे थे, फिर भी किसी तरह पता ढूँढते-ढूँढते



हम वहाँ तक पहुँच ही गए। संजय का फोन कभी भी डिस्चार्ज होने वाला था।

“ओ.के। आप लोग आ गए? मैं गार्ड के हाथ में आपका फोन भेज रहा हूँ” वह बोला

कुछ समय बाद गार्ड आया और मेरा फोन मेरे हाथ में था। आत्मिक संतोष की एक अद्भुत अनुभूति। फिर से बस में और उसके बाद होटल के बस स्टॉप पर उतर गया।

“अरे सर, आप कहाँ हो? मैडम परेशान हो रही हैं। आपको फोन लगा रही हैं और कोई अलग व्यक्ति उठा रहा है। आपका दूसरा नंबर स्विच-ऑफ बता रहा है। तुरंत बात कर लीजिए” दिल्ली से रेखा का कॉल आया।

बाप रे! खबर कहाँ तक फैल गई थी। अब तो मोबाइल मेरे पास था। मैंने श्रीमती जी का नंबर लगाया। अरे भई कहाँ हैं आप? अपना फोन कहीं भी भूल जाते हैं। आखिर जिम्मेदारी भी कुछ चीज होती है..... इत्यादि (चिर-परिचित वाक्य!)”

मैंने स्वीकार किया कि भूलवश फोन बेंच पर रह गया था। मगर भला हो उस व्यक्ति का, जिससे संपर्क हो सका और उसने वापिस भी कर दिया।

“वैसे आपको यह कैसे पता चला कि मेरा मोबाइल खो गया था?” मैंने पूछा।

अरे, आज मुझे हॉस्पिटल में मिस्टर दुआ मिले थे। उन्होंने पूछा आज सर नहीं आए, तो मैंने उन्हें बताया कि ‘सर’ तो आस्ट्रेलिया गए हैं” श्रीमती जी बोलीं।

“अरे वाह, वहाँ तो मेरा भतीजा रहता है, मैं उसे सर का नंबर देता हूँ, वो उनसे मिल लेगा” दुआ जी ने श्रीमती जी से कहा।

“फिर मैं हॉस्पिटल से घर आ गई। दिन में दुआ जी का फोन आया। उनके भतीजे ने अभी उनको फोन किया था और उसने बताया कि साहब का फोन तो किसी और के पास है। उसे पता नहीं कि पाण्डे जी कहाँ हैं। अब तो मेरी चिंता बढ़ गई। मैंने रेखा यादव को फोन लगाया क्योंकि

संजय का नंबर मेरे पास नहीं था।” श्रीमती जी बोलीं।

तेजी से बढ़ते इस घटनाक्रम में रेखा यादव ने संजय को फोन लगाया। लगभग उसी समय, जब संजय का फोन डिस्चार्ज हो गया था। रेखा ने मैडम को बताया कि दोनों के नंबर नहीं मिल रहे हैं और मेरे फोन पर घंटी जा रही है मगर कोई उठा नहीं रहा। यह लगभग वह समय रहा होगा जब फोन उस व्यक्ति के पास था, जो संभवतः निरंतर आती कॉल से परेशान हो गया होगा।

भारत में चल रहे इस घटनाक्रम से हम अनभिज्ञ थे, जिसमें श्रीमती पाण्डे, रेखा यादव और मिस्टर दुआ, पाण्डे जी की वस्तुस्थिति को लेकर परेशान थे। मैं और संजय तो आस्ट्रेलिया में उस बिल्डिंग की तलाश कर रहे थे जहाँ मोबाइल का तत्कालीन अधिपति हमारा इंतजार कर रहा था। मुझे तो लगता है कि वो भी इतने इनकमिंग फोन कॉल से त्रस्त हो जल्दी से जल्दी इस फोन से अपना पिंड छुड़ाना चाहता था।

जो भी हो, कालखंड एक ही था, स्थान अलग-अलग लेकिन घटनाक्रम का समापन फोन मेरे पास वापिस आने से हुआ। हालांकि वह व्यक्ति मुझसे मिला नहीं, मगर उसने बताया कि वह ब्राजील का है। इसीलिए उसकी अंग्रेजी मुझे समझ में नहीं आ रही थी।

“देखा! बचू हमारी नजर से बच नहीं सकते” श्रीमती जी बोलीं। “यह तीसरी बार है जब आप फोन इधर-उधर पटक के आ जाते हो। ...(वही पुराने वाक्य!)” कह कर उन्होंने फोन काट दिया।

जी हाँ। मेरा फोन तो मुझे वापिस मिल गया था। मगर यह खबर जिस तक नहीं जानी थी, उसी तक पहले पहुँच गई। पुलिस की बात तो पुलिसवाले जाने, मगर हमें पुनः याद दिलाया गया था कि हम तो सतत निगरानी में हैं।

(नोट: इस कहानी का कोई भी पात्र काल्पनिक नहीं है)

—मनोज पाण्डे

पूर्व सदस्य कार्मिक, रेलवे बोर्ड

“अगर हमें हिंदुस्तान को एक राष्ट्र बनाना है, तो राष्ट्र भाषा हिंदी ही हो सकती है।”

—महात्मा गांधी



हंसे और स्वस्थ रहें

हंसना मानव का स्वभाव है। यहां तक कि गर्भस्थ शिशु भी हंसता है। एक स्टडी के मुताबिक, तीन साल तक एक सामान्य बच्चा रोज तीन-चार सौ बार हंसता, मुस्कराता है लेकिन जैसे-जैसे बड़ा होता है, हंसना कम हो जाता है। एक वयस्क आमतौर पर 15-20 बार भी नहीं हंसता है।

क्या आप जानते हैं कि हमारे गुमसुम रहने या हंसने-मुस्कराने में कंजूसी बरतने की वजह से तनाव, डिप्रेशन, डायबिटीज, बी.पी. और यहां तक कि कैंसर जैसी गंभीर बीमारी की चपेट में भी आ सकते हैं।

बैंगलुरु के डॉ. मदन कटारिया ने विश्व हास्य योग आंदोलन की शुरुआत की है। उनका कहना है कि यदि इंसान एक दिन में 15-20 बार भी खुलकर हंस ले, तो कई बीमारियों से बचाव हो जाता है। आपकी हंसी असली हो या नकली इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। आपके शरीर को पता नहीं होगा कि आप नकली हंसी हंस रहे हैं या असली। उसे तो बस हंसने से होने वाले प्रभाव से मतलब है।

लाफ्टर थैरेपी उपचार की वह पद्धति है जिसमें बिना किसी दवा के बीमारी का उपचार किया जाता है। बड़ी से बड़ी बीमारियां इससे ठीक होती देखी गई हैं। इस थैरेपी के कोई साइड इफेक्ट भी नहीं हैं।

आजकल जगह-जगह लाफ्टर क्लब बनने लगे हैं। सार्वजनिक स्थानों, पार्क आदि में लोग सुबह की सैर के लिए जाते हैं और वहां एकजुट होकर खूब हंसते ठहाके लगाते हैं। हालांकि उनकी यह हंसी अकारण और नकली होती है, लेकिन फायदे असली हंसी के समान ही होते हैं। यह एक प्रकार का योग भी है, इसमें तन और मन दोनों को अधिक ऑक्सीजन मिलती है।

जोर से हंसना, ठहाके लगाना किसी व्यायाम से कम

नहीं है। इससे फेफड़े खुलते हैं। श्वसन तंत्र मजबूत होता है। कार्बन डाई ऑक्साइड बाहर निकलती है तथा ऑक्सीजन भीतर जाती है। इससे शरीर ऊर्जावान बनता है।

आज से ढाई दशक पूर्व, जब मुंबई में लॉफ्टर क्लबों की स्थापना हुई, तो वहां जाकर हंसने और ठहाके लगाने वालों को देखकर लोग उनको पागल समझते थे, लेकिन जैसे-जैसे रोगी अपने शारीरिक और मानसिक कष्टों से छुटकारा पाकर इन क्लबों से स्वस्थ होकर लौटने लगे तब लोगों को इसके प्रति अपनी धारणा बदलनी पड़ी और जो लोग पहले हंसने वालों को पागल समझकर उनका मजाक बनाते थे, आज स्वयं इन लॉफ्टर क्लबों के सक्रिय सदस्य हैं और अपने कष्टों से निजात पाने की कोशिश में हैं।

दुनियाभर के लोगों ने इस चिकित्सा पद्धति पर अपनी दिलचस्पी और जिज्ञासा जाहिर की है और इसकी जानकारी प्राप्त करने हेतु उनके प्रतिनिधि मुंबई पहुंचकर, इस पद्धति का अध्ययन कर रहे हैं। विशेषतौर पर ब्रिटेन, इटली, ऑस्ट्रेलिया, स्पेन और जापान ने इस दिशा में विशेष रुचि दिखाई है।

भारत में मुंबई के अलावा कोलकाता, दिल्ली, अहमदाबाद, पटना, पूना आदि में ये क्लब खुल चुके हैं। मुंबई में काफी साल से किशोर कुवा वाला लाफ्टर क्लब चला रहे हैं। उन्होंने मंत्र दिया है- लॉफ-मुंबई। किशोर कहते हैं कि हंसने से शरीर और मन एकरूप हो जाता है। तो हमारे विचार तुरंत बंद हो जाते हैं। इससे चिंता, व्यग्रता, उदासीनता, अवसाद सब खत्म हो जाते हैं। हंसने के फायदे बताते हुए कहते हैं कि हंसने या हंसने की क्रिया करने से शरीर में बायोकेमिकल प्रतिक्रिया होती है। इसके कारण दो हार्मोन निकलते हैं- एंडोकिन और इम्यूनोग्लोबिन। एंडोकिन हार्मोन दर्द, सूजन को कम करता है। वहीं इम्यूनोग्लोबिन शरीर की प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाता



है। इसके कारण संक्रामक रोग नहीं होते।

हंसना, तनाव दूर करने का सर्वोत्तम उपाय है। मन और मस्तिष्क दोनों को शांति मिलती है। अवसाद को भी दूर करने में मदद मिलती है। हंसने से केवल चेहरा ही नहीं, अपितु संपूर्ण शरीर हकरत में आता है यानी सम्पूर्ण व्यायाम होता है पाचन तंत्र, खासतौर पर आतें सक्रिय बनी रहती है। जब खुलकर हंसते हैं- तो श्वास द्वारा अधिक मात्रा में ऑक्सीजन शरीर को मिलती है। इससे रक्ताणुओं में वृद्धि होती है तथा रक्त की शुद्धि भी होती है। शरीर की मांसपेशियों और अंगों का भी अनावश्यक दबाव दूर होता है।

हंसी जीवन में नकारात्मकता दूर करती है तथा सकारात्मकता का सृजन करती है। इससे व्यक्ति के सोचने का नजरिया ही बदल जाता है। उसे अपने जीवन में चारों ओर खुशियां ही खुशियां नजर आने लगती है। इससे उसके जीने का उत्साह बढ़ता है।

हंसने और मुस्कराने में संकोच नहीं होना चाहिए। यह तो शरीर की एक स्वाभाविक क्रिया है। इसे रोकना ठीक नहीं। महिलाएं खुलकर हंसने से बचती हैं। उन्हें लगता है कि लोग उनकी हंसी का गलत अर्थ नहीं निकाल लें। उनकी यह संकोची प्रवृत्ति हंसी के लाभ से उन्हें वंचित कर देती है।

हंसी जादुई असर छोड़ती है। खासकर तब, जब आपका मूड उखड़ा हो या आप उदास हों। हंसने से मस्तिक में ऐसे रसायन का स्राव होता है जो मूड को बेहतर बनाता है। इससे आपकी कार्यक्षमता बढ़ती है। तनाव सौ रोगों की जड़ होता है। हंसी इस तनाव को दूर करती है। यानी अप्रत्यक्ष रूप से तमाम रोगों की रोकथाम करती है।

हंसी आपके पारिवारिक और सामाजिक रिश्तों को भी मजबूत बनाती है। इससे आपका सामाजिक दायरा बढ़ता है और आप लोकप्रिय होते हैं। हंसी की वजह से आप अधिक से अधिक लोगों से जुड़ पाते हैं।

हंसना व्यक्ति की आदत भी है। कुछ लोग खुलकर

हंसते हैं। हंसी उनके स्वभाव में होती है। उनके चेहरे पर सदैव हंसी कायम रहती है। इससे वे आसानी से दूसरों को अपनी ओर आकर्षित कर पाते हैं।

विशेषज्ञों का कहना है कि डायबिटीज में हंसी एक दवा का काम करती है। इससे रक्तशर्करा नियंत्रित रहती है। यदि वे रोजाना आधा घंटा हंसी की खुराक लें, तो उन्हें हार्ट डिजीज होने की आशंका भी कम हो जाती है। हंसी से अच्छा कोलेस्ट्रॉल का स्तर बढ़ता है। वैसे हंसना दिल की सेहत के लिए भी अच्छा है। इससे रक्त संचार सही बना रहता है।

हंसने का मन मस्तिष्क पर मनोवैज्ञानिक प्रभाव पड़ता है। इससे हमारा क्रोध शांत होता है तथा हम शीघ्र सामान्य स्थिति में आ जाते हैं। यह आवेश पर ब्रेक लगाती है। हंसी की वजह से हमारे मन में प्रतिशोध की ज्वाला भी शांत हो जाती है।

हंसी की वजह से हम बुरी या विपरीत परिस्थितियों का सामना सरलता से कर लेते हैं। किसी तरह का दुख, दर्द, संताप पलभर में दूर हो जाता है।

हंसी हमारी रोगप्रतिरोधक क्षमता भी बढ़ाती है। यदि हमारी इम्युनिटी अच्छी है, तो हम रोगों से बचे रहेंगे। इससे शरीर हृष्ट-पुष्ट होता है।

आज की व्यस्त और भागमभाग की जिंदगी में हाई ब्लड प्रेशर की समस्या बढ़ती जा रही है। यदि इसके रोगी अपने जीवन में हास्य योग को अपनाएं तो उनका रक्तचाप कम हो सकता है।

हंसने-ठहाके लगाने से संपूर्ण शरीर हरकत में आता है। यह ऐसी एक्सरसाइज है जिसे हर उम्र का व्यक्ति कर सकता है। शरीर के प्रत्येक अंग को इससे लाभ होता है।

अवसाद या डिप्रेशन से उभरना हो तो हंसना जरूरी है। इससे निराशा के भाव खत्म होते हैं तथा आशा का संचार होता है।

हंसने से कैलोरी बर्न होती है। खुलकर हंसने से हार्ट बीट बढ़ती है, पेट की मांसपेशियों में मजबूती आती है।

जिनके चेहरे पर सदैव हंसी कायम रहती है, वे



चिरयुवा होते हैं। उम्र उन पर हावी नहीं होती। उनके चेहरे पर झुर्रियां, झाइयां दिखाई नहीं देतीं, अपितु एक चमक होती है।

फेफड़ों की सेहत के लिए हंसी से अच्छा और उपाय नहीं है। इससे फेफड़ों की कार्यक्षमता बढ़ती है।

हंसने से सेल्स को सही मात्रा में ऑक्सीजन मिलती है। इससे कैंसर, सेल्स के बढ़ने की आशंका कम हो जाती है।

ब्लडप्रेसर से खून की नलियां फैलती हैं। इससे ब्लड सर्कुलेशन सही होता है और बी.पी. रेगुलेट होता है।

दिल की नलियों में फैलाव-सिकुडन से हार्टअटैक का खतरा कम हो जाता है।

इसमें कोई शक नहीं कि शारीरिक और मानसिक सेहत लाफ्टर थेरेपी बहुत महत्वपूर्ण रोल अदा करती है। इससे न्यूरोट्रांसमीटर रिलीज होते हैं जिससे बीमारियों को नियंत्रित करने में मदद मिलती है।

जिस तरह शरीर के दूसरे हिस्सों की मांसपेशियों की बेहतरी के लिए जॉगिंग करते हैं। उसी तरह हंसने से गाल ब्लैडर, किडनी, लंग्स आदि अंदरूनी अंगों की जॉगिंग होती है। हंसी से इंसान की आयु बढ़ती है। यानी वह दीर्घायु हो सकता है। ऐसे लोग बड़ी मुसीबतों का हंसकर सामना करने में समर्थ होते हैं। कैंसर जैसी बीमारी को भी वे अपनी हंसी और जीवन जीने की दृढ़ इच्छाशक्ति के बल पर परास्त कर देते हैं।

हंसी हमारी स्मरणशक्ति को भी बढ़ाती है। अल्जाइमर रोग की चपेट में आने से बच सकते हैं। इस रोग में भूलने की समस्या उत्पन्न होती है।

जीवन की डगर चाहे कितनी कांटेभरी हो, हंसते-हंसते उसे पार किया जा सकता है। अन्यथा दो कदम चलना भी दुश्वार हो जाता है। यह रिलेक्स करती है और आपका मनोबल बनाए रखती है।

-डॉ. विनोद गुप्ता

43/2, सुदामानगर, रामटेकरी,
मन्दसौर (म.प्र.)

कविता

क्यों न खुशी मनाऊं आज

क्यों न खुशी मनाऊं आज
क्यों न हिंदी गीत गाऊं आज

नव रस का आनंद है हिंदी
अलंकारों से सजी ये हिंदी
छंदों में छलकती हिंदी
चौपाइयों में बसी ये हिंदी

क्यों न खुशी मनाऊं आज
क्यों न हिंदी गीत गाऊं आज

कवि की कल्पना ये हिंदी
संगीत का स्वर ये हिंदी
कलाकार का अभिनय हिंदी
भक्तों की वाणी ये हिंदी

क्यों न खुशी मनाऊं आज
क्यों न हिंदी गीत गाऊं आज

सरिता का वेग है हिंदी
मोक्ष का प्रवचन है हिंदी
झरने की तरूणाई ये हिंदी
जीवन की ये सांस है हिंदी

क्यों न खुशी मनाऊं आज
क्यों न हिंदी गीत गाऊं आज

रामायण की रामकथा है हिंदी
महाभारत का द्वंद है हिंदी
कृष्ण की बांसुरी है हिंदी।
सुदामा की भांति मित्र है हिंदी

क्यों न खुशी मनाऊं आज
क्यों न हिंदी गीत गाऊं आज

-हरीश श्रीवास्तव

पूर्व राजभाषा अधिकारी, पश्चिम मध्य रेलवे



एक अविस्मरणीय यादगार

बात 1978 की है। मैं ग्वालियर में इंजीनियरिंग की पढ़ाई कर रहा था। हमारा घर थाटीपुर में जीवजीनगर कॉलोनी में है। मैं घर के गेट में खड़ा हो कर किसी मित्र का इंतज़ार कर रहा था। अचानक देखा कि अटल बिहारी वाजपेयी जी जो उस समय विदेश मंत्री थे, साइकिल चलाते हुए आए और मेरे सामने खड़े हो गए। यह बहुत ज्यादा अचंभा करने वाली बात नहीं थी क्योंकि उनकी भांजी संध्या शुक्ला (पति फूड इंस्पेक्टर) हमारे घर में किराए पर रहती थीं।

लेकिन अचंभा इस बात का था कि विदेश मंत्री स्वयं साइकिल चला के अपने किसी रिश्तेदार से मिलने आए।

खैर मैंने उनका स्वागत किया और संध्या दीदी को बुलाया। संध्या जी आई और अभिवादन करने के पश्चात बोलीं कि डिप्टी (मेरा बचपन का निक नेम) तुम इनके साथ बैठो, मैं कुछ बना के लाती हूँ। वैसे भी यह जो बात करते हैं वो मुझे समझ में नहीं आतीं। बस फिर क्या था, मेरे और अटल जी के मध्य करीब एक घंटे वार्तालाप चला और शायद ही समकालीन कोई विषय बचा होगा जो बातचीत में नहीं आया।

थोड़ी देर बाद सिक्कोरिटी वाले उन्हें ढूँढते हुए हमारे घर तक पहुँचे और शिकायत करने लगे कि सर आप एक सिक्कोरिटी रिस्क पर हैं और ऐसे बगैर बताए न जाया करें।

अटल जी बोले कि अगर मैं ऐसे नहीं आता तो तुम लोग मुझे अपनों से मिलने का वक़्त कहाँ देते।

उस समय हमारी कॉलोनी नई-नई बन रही थी। अटल जी ने बताया कि जिस समारोह में वो शिरकत करने आए थे वहीं पर एक कार्यकर्ता की साइकिल लेकर वो हमारे घर पहुँचे थे। एक बात वो और बोले कि जब मैं तुम्हारे घर की तरफ़ आ रहा था तो, एक प्लॉट पर भूमि-पूजन चल रहा था। वो लोग इनको देख के बोले की देखो-देखो एक आदमी जो बिलकुल अटल जी जैसा दिखता है साइकिल चला के आ रहा है। उन लोगों ने अटल जी को रोक कर भूमि-पूजन का लड्डू खिलाया, जिसे अटल जी ने सहर्ष स्वीकार किया, और बगैर अपनी असली पहचान बताए और फिर साइकिल पर बैठ हमारे घर की ओर साइकिल चलाने लगे।

आज जब वो हमारे बीच नहीं हैं तो यह वाक़्या मुझे याद आया और मुझे इसे मित्रों के साथ साझा करने की इच्छा हुई।

“बड़ी रौनक होगी आज भगवान के दरबार में
एक फ़रिश्ता पहुँचा है ज़मीन से आसमान में।”
दिवंगत आत्मा को शत शत नमन।

—ललित चंद्र त्रिवेदी

महाप्रबंधक, पूर्व मध्य रेल

कविता

बेटी करे पुकार

गर्व से बेटी करे पुकार,
मां मुझे भी देखना है संसार
मुझे भी चाहिए पापा का प्यार
पंख लगा के उड़ना है एक बार।

खेल-खिलौनें नहीं चाहिए
बस चाहिए थोड़ा-सा प्यार
भईया से भी मुझको प्यार
भाई की सूनी कलाई का मैं हूँ हार।

पढ़-लिखकर रोशन कर दूंगी तेरा संसार
जीवन में खुशियां भर दूंगी हजार
मुझको भी जीवन दे दो एक बार
झोली में भर दूंगी खुशियां अपार।

मेरे दुनिया में आने से क्यों डरते हो हर बार
मेरे जीवन का तुम ही हो आधार
क्यों करते हो ये अत्याचार
मां मुझे भी देखना है ये संसार
मां मुझे भी देखना है ये संसार।

—साधना अग्रवाल

अनुभाग अधिकारी, रेलवे बोर्ड

शिखर तक पहुंचने के लिए ताकत चाहिए होती है, चाहे वो माउंट एवरेस्ट का शिखर हो या आपके पेशे का।

—डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम



माँ सब जानती है

आज मेट्रो में सफर करने का अवसर मिला। कुछ अटपटा सा लग रहा था। एक अरसा हो चुका था सार्वजनिक परिवहन में सफर किए हुए। परंतु मेट्रो की कोच में प्रवेश करते ही जब उसने चारों तरफ नजर दौड़ाई तो किसी को ऊंधते पाया तो किसी को अपने साथी के साथ बतियाते पाया। ज्यादातर लोग व्हाट्सएप में ही व्यस्त या फोन पर बात कर रहे थे। उसकी घबराहट कुछ कम हो गई। अचानक उसका ध्यान अपने सामने की सीट पर बैठे मां-बेटे पर केंद्रित हो गया। मां लगभग 1 वर्षीय बच्चे को अपनी गोद में बिठाकर दूध की बोतल से पानी पिला रही थी। बहुत प्यारा बच्चा था। पानी पीते-पीते वह बीच-बीच में इधर-उधर भी देखता रहता। जब बच्चे की नजर उससे मिली तो वह पानी पीना छोड़ कर कुछ देर तक उसे देखता रहा था। वह मुस्कुरा दी। उसकी मुस्कुराहट से बच्चा झेंप गया और फिर बोतल से पानी पीने में मस्त हो गया।

पानी पिलाने के बाद मां ने बच्चे को अपनी गोद में खड़ा कर लिया। बच्चा गाड़ी के सफर का भरपूर आनंद उठा रहा था जिसे वह अपनी बाहों और टांगों को विभिन्न मुद्राओं में हिला कर व्यक्त कर रहा था। एक स्टेशन पर गाड़ी के रुकने के कारण बच्चे का सिर हल्के से खिड़की से जा लगा। बच्चे के हावभाव तुरंत बदल गए और उसने जोर-जोर से रोना शुरू कर दिया। मां ने बच्चे को झट से सीने से लगा लिया परंतु उसके लाख पुचकारने पर भी बच्चा चुप नहीं हो रहा था। वह असहज महसूस करने लगी।

उसका मन कर रहा था कि वह बच्चे के पास उठ कर जाए और ऐसा कुछ करे कि बच्चा चुप हो जाए। उसने एक बार नजर भरकर बच्चे की मां की तरफ देखा। वह एक गांव की साधारण-सी महिला लग रही थी। बच्चे के रुदन से विचलित हुए बिना मां ने बच्चे को अपनी बाजू से एक चूड़ी उतार कर उसे दे दी। चूड़ी हाथ में लेते ही बच्चा एक दम से चुप हो गया

और चूड़ी के साथ खेलने में व्यस्त हो गया। बच्चा फिर से हंस खेल रहा था। बच्चे को हंसता खेलता देख उसे राहत महसूस हुई और वह अपनी सीट पर बैठे-बैठे मुस्कुरा दी। वह बच्चे की हरकतों को देखने में मग्न थी कि अचानक उसकी नजर बच्चे की मां की नजरों से मिली। आंखों ही आंखों में दोनों मुस्कुरा दीं जैसे दोनों ही एक दूसरे से कह रही हों, 'मां सब जानती है।'

—मंजू

संयुक्त निदेशक, रेलवे बोर्ड

कविता

बेटी

एक धरा है, एक गगन है, और है एक बेटी
इस सृष्टि की श्रेष्ठ रचना है हर बेटी।

सर्दी की गुनगुनी धूप है हर बेटी
गर्मी की शीतल छांव है हर बेटी।

बरसात की रिमझिम फुहार हर बेटी
सावन की नवशृंगार है हर बेटी।

परिवार में उत्साह का संचार है हर बेटी
गम में भी मुस्कान की पहचान है हर बेटी।

ले जन्म धरती पर किया अहसान है हर बेटी
धरती पर खुशियों की सौगात है हर बेटी।

जीवन की खुबसूरती की मान है हर बेटी
हर युग में सृष्टि की आधार है बेटी।

—राज रंजन श्रीवास्तव

राजभाषा अधिकारी, जबलपुर मंडल,
पश्चिम मध्य रेलवे

‘कलम के धनी रेल कर्मियों एवं लेखकों से निवेदन’

- आपकी उत्कृष्ट रचनाओं का ‘रेल राजभाषा’ में स्वागत है।
- अपनी रचनाओं की मूल प्रति ही भेजें। लेख/कविता आदि के साथ एक घोषणा पत्र भी संलग्न करें, जिसमें यह स्पष्ट किया गया हो कि शीर्षक से शुरू होने वाला लेख/कहानी/कविता आदि मौलिक एवं अप्रकाशित है तथा इसमें दी गई सामग्री की जिम्मेदारी लेखक की है। रचनाएं यूनिकोड फॉर्मेट में टाइप कराकर ही भेजें।
- पत्रिका को और बेहतर बनाने के लिए लेखकों और पाठकों के पत्रों एवं सुझावों का स्वागत है।
- लेखकों से अनुरोध है कि अपना बैंक खाता संख्या, ब्रांच का पता तथा आई.एफ.एस.सी. कोड अपनी टाइप की हुई रचना के साथ हमारे ई-मेल patrikahindi@gmail.com पर भेजें

संपादक, रेल राजभाषा



भारतीय रेल पर हिंदी के उन्नायक शिवसागर मिश्र

शिवसागर मिश्र हिंदी जगत का एक सुपरिचित नाम है। उनका जन्म 10 मार्च, 1927 को बिहार के समस्तीपुर जनपद के श्रीरामपुर ग्राम में हुआ था। वे किशोरावस्था में ही स्वतंत्रता संग्राम में कूद पड़े, जिसके कारण उन्हें जेल की सजा तो भोगनी ही पड़ी, बिहार से निष्कासन भी भोगना पड़ा। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में शिक्षा पूर्ण करने के बाद उन्होंने साहित्य को ही अपना लिया। वे राष्ट्रकवि दिनकर जी के दामाद थे।

सन् 1950 में ऑल इंडिया रेडियो (आज का आकाशवाणी) से जुड़ गए हैं। आकाशवाणी की 'हिंदी फीचर : स्वरूप और विकास' पुस्तक में शिवसागर मिश्र के बारे में लिखा है:- अपने कैरियर के शुरुआती दिनों में ऑल इंडिया रेडियो पर अंशकालिक रूप में कार्य करने वाले शिवसागर मिश्र जी एक ख्यातनाम रेडियो फीचर लेखक के रूप में सर्वपरिचित हैं। अपनी प्रतिभा, अच्छी आवाज और सर्जनात्मक शक्ति के बूते पर उन्होंने रेडियो की सभी विधाओं में निपुणता हासिल की थी।

अपने कार्य के प्रतिनिष्ठा और प्रामाणिकता रखने वाले मिश्र जी ने दिल्ली आकाशवाणी में विभिन्न महत्वपूर्ण पदों पर कार्य किया। रूपक विभाग के चीफ प्रोड्यूसर के रूप में उन्होंने उल्लेखनीय कार्य किया। एक सृजनशील साहित्यिक के रूप में भी उन्होंने कविता, कहानी, लेख तथा उपन्यास आदि विधाओं पर अपनी लेखनी चलाई।

शिवसागर मिश्र जी ने रेडियो के लिए अनेक फीचर लिखे हैं: उनमें आवाज स्यालकोट पहुंची, कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं, मुक्तिपर्व कुंभ, श्री कर्मयोगी शास्त्री, गणतंत्र दिवस पर गणतंत्र की गंगा, अपनी बाहें अपना बल, हमारे गांव और आजादी की नींव, कल भी समय का सौंदर्य, सत्य का सूर्योदय, विरासत, कित्ता पानी कित्ता धान, पहिया समय का, गणदेवता, बांग्लादेश की मान्यता: एक नया अध्याय आदि प्रसिद्ध हैं।

उन्होंने भारत पाकिस्तान युद्ध 1971 का आंखों देखा हाल स्वयं युद्ध भूमि से किया था और प्राण संकट में आ गए थे।

सन् 1973 में उन्होंने प्रतिनियुक्ति पर रेल मंत्रालय में निदेशक राजभाषा एवं औद्योगिक प्रचार का पद धारण किया। भारतीय रेल पर राजभाषा हिंदी का प्रयोग प्रसार बढ़ाने के उन्होंने गृह मंत्रालय राजभाषा विभाग की योजनाओं के अलावा कई योजनाओं की नींव डाली। रेल मंत्रालय अन्य मंत्रालयों की अपेक्षा सबसे बड़ा मंत्रालय है और उसमें 16 स्वतंत्र विभाग हैं, इसलिए उन्होंने विभागीय अंग्रेजी हिंदी शब्दावली बनाने की योजना बनाई। हिंदी में मौलिक लेखन

को प्रोत्साहन देने के लिए कई प्रोत्साहन पुरस्कार योजनाएं बनाई। हिंदी में मूल रूप से तकनीकी पुस्तक लिखने वाले अधिकारियों व कर्मचारियों के लिए पुरस्कार योजना बनाई। हिंदी में साहित्य सृजन करने वाले अधिकारियों व कर्मचारियों के लिए गद्य साहित्य के लिए मुंशी प्रेमचंद पुरस्कार और पद्य साहित्य के लिए राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त पुरस्कार योजना बनाई। भारतीय रेल पर वे विधिवत राजभाषा संवर्ग बनाना चाहते थे ताकि संघ लोकसेवा आयोग से चयनित होकर आए हिंदी अधिकारी आगे चलकर रेल प्रशासन में भागीदारी कर सकें। इसमें उन्हें सफलता नहीं मिली, परंतु संघ लोक सेवा आयोग से सीधे प्रथम श्रेणी वरिष्ठ वेतनमान में हिंदी अधिकारी की भर्ती कराने की योजना बनाने में अवश्य सफल हुए। आज केवल भारतीय रेल पर संघ लोकसेवा आयोग द्वारा इन पदों पर भर्ती होती है। अन्य किसी मंत्रालय में नहीं, गृह मंत्रालय में भी नहीं। भारतीय रेल पर हिंदी के प्रयोग प्रसार के लिए उनका यह सम्मानजनक अप्रतिम योगदान है।

उन्होंने रेलवे बोर्ड, महाप्रबंधक मंडल रेल प्रबंधक, कारखाना, डिपो व स्टेशन स्तर हिंदी पुस्तकालय व वाचनालय खोलने की योजना बनाई, जो आज भी विद्यमान है। उनकी पुस्तकें बड़े बड़े प्रकाशकों ने प्रकाशित की। उनके द्वारा लिखे गए उपन्यास हैं:- दुर्दिन की धूप, अक्षत, राजतिलक, अजन्मा वह, मगध की जय, चाँद के धब्बे, पहिया समय का, प्रतिशोध, प्रतीक्षा, सलीब ढोते लोग, अंधेरे का सूरज, अनामिका, अभिमान, अमर ज्योति, आखिर कब तक, रक्तबीज, रक्त सनी गुड़िया और गिद्ध आदि।

अन्य पुस्तकें हैं मील के पत्थर, भारत की गौरव गाथा, हिंदी हम सबकी। शोध परक ग्रंथ है 'दिनकर : एक सहज पुरुष'। शिवसागर मिश्र पर लिखा ग्रंथ - उपन्यास कार : शिवसागर मिश्र लेखक डॉ बरदेव बंशी, प्रभात प्रकाशन। 1990 में जब केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो में अनुवाद प्रशिक्षण पर था तब पूज्य श्री गोपाल चतुर्वेदी जी के उनके बीमार होने की बात बताई तो उनके दर्शनार्थ नोएडा गया था। बड़े प्रेम से मिले और कहा सत्येंद्र तुम पहले व्यक्ति हो जो मेरे सेवानिवृत्त होने के बाद किसी ज़ोन और मंडल से मिलने आए हो। उस समय मैं तत्कालीन मध्य रेल के जबलपुर मंडल पर कार्यरत था। ऐसे कभी कभी उनकी याद आ जाती है।

—सत्येंद्र सिंह

पूर्व वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी मध्य रेल पुणे, 'रामेश्वरी-सदन' सप्तगिरी सोसायटी, जांभुलवाडी रोड, आंबेगांव खुर्द, पुणे 411046

रेल मंत्रालय की उपलब्धियां

भारतीय रेल राजभाषा हिंदी को बढ़ावा देने के लिए हमेशा प्रयासरत रही है, इसी वजह से भारतीय रेल को गृह मंत्रालय द्वारा वर्ष 2020 में 9वीं बार "राजभाषा कीर्ति पुरस्कार" से सम्मानित किया गया है, भारतीय रेल के लिए यह गौरव का विषय है।



रेल मंत्रालय..... राजभाषा निदेशालय की नई पहल.... रेल मंत्री प्रवेश द्वार एवं मुख्य स्वागत कक्ष प्रवेश द्वार पर डिजिटल डिस्प्ले सिस्टम में हिंदी की सूक्तियों के प्रदर्शन का शुभारंभ।



रेल मंत्रालय द्वारा राजभाषा सप्ताह-2020 का आयोजन (एक झलक)

दिनांक 14 से 18 सितंबर, 2020 तक रेल मंत्रालय (रेलवे बोर्ड) में हिंदी सप्ताह का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया। इस दौरान, वर्तमान कोविड-19 महामारी के परिप्रेक्ष्य में सरकार द्वारा समय-समय पर जारी दिशा-निर्देशों, मानक प्रचालन पद्धति (एसओपी) को ध्यान में रखते हुए बोर्ड कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों में राजभाषा के प्रति अभिरुचि उत्पन्न करने के उद्देश्य से विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए गए।



दिनांक 14.09.2020 को हिंदी सप्ताह के शुभारंभ पर कार्यपालक निदेशक (औ.सं.) श्री दीपक पीटर गैब्रियल मां सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्वलित करते हुए

सप्ताह के दौरान तत्कालीन निदेशक (राजभाषा), कार्यपालक निदेशक (औ.सं.) श्री दीपक पीटर गैब्रियल का स्वागत करते हुए।



तत्कालीन निदेशक (राजभाषा) माननीय गृहमंत्री जी एवं माननीय रेल मंत्री जी के हिंदी दिवस संदेश का वाचन करते हुए।

हिंदी सप्ताह के दौरान रेलवे बोर्ड सभागृह में तत्कालीन निदेशक (राजभाषा), श्री बरुण कुमार, अधिकारियों एवं कर्मचारियों को संबोधित करते हुए।



दिनांक 08.10.2020 को कार्य. निदेशक, स्था. (आर.) श्री मनोज कुमार राम मां सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्वलित करते हुए।

कार्य. निदेशक, स्थापना (आर.) हिंदी निबंध, टिप्पण एवं प्रारूप लेखन प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार प्रदान करते हुए।



संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उपसमिति द्वारा पूर्व तट रेलवे, भुवनेश्वर, शिरडी रेलवे स्टेशन, रेल सुरक्षा विशेष बल मुख्यालय, दिल्ली तथा कोंकण रेलवे, बेलापुर, नवीं मुंबई के निरीक्षण संबंधी बैठक के दृश्य



रेल अंचलों से



अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री सुनीत शर्मा दिनांक 17 फरवरी, 2021 को निदेशक राजभाषा, श्री विपिन पवार की पुस्तक "अक्षरों की मेरी दुनिया" का विमोचन करते हुए।

मध्य रेल की गृहपत्रिका रेल सुरभि का दिनांक 23/02/2021 को महाप्रबंधक, मध्य रेलवे विमोचन करते हुए।



महाप्रबंधक मध्य रेल श्री संजीव मित्तल पुणे मंडल के वार्षिक निरीक्षण के अवसर पर राजभाषा प्रदर्शनी का अवलोकन करते हुए।

रैल अंचलों सै



भारतीय रेल सिविल इंजीनियरी संस्थान, पुणे में दिनांक 14 सितंबर, 2020 को राजभाषा सप्ताह के आयोजन के दौरान प्रतियोगिताओं में विजेताओं को महानिदेशक महोदय पुरस्कार प्रदान करते हुए।

दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे में दिनांक 14.09.2020 को राजभाषा सप्ताह के शुभारंभ पर मुख्य राजभाषा अधिकारी श्री एस. के. सोलंकी मां सरस्वती के छायाचित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलित करते हुए।



रेल डिब्बा कारखाना द्वारा 17.09.2020 को आयोजित हिंदी वाक् प्रतियोगिता का दृश्य

अनुसंधान अभिकल्प एवं मानक संगठन में दिनांक 14-09-2020 को राजभाषा सप्ताह समारोह के अवसर पर महानिदेशक महोदय दीप प्रज्वलित करते हुए।



रेल अंचलों से



अनुसंधान अभिकल्प एवं मानक संगठन में राजभाषा सप्ताह समापन समारोह-2020 के अवसर पर अपर महानिदेशक महोदय से स्मृति चिह्न प्राप्त करते हुए प्रतिभागीगण।

कोंकण रेलवे में दिनांक 16.09.2020 को कार्यालय में कंप्यूटरों/लैपटॉप पर हिंदी यूनिकोड फॉन्ट तथा वाइस टाइपिंग के उपयोग संबंधी कॉर्पोरेट कार्यालय, बेलापुर, क्षेत्रीय कार्यालय रत्नागिरी और कारवार में टेबल प्रशिक्षण देते हुए।



क्षेत्रीय रेल प्रबंधक कार्यालय, रत्नागिरी कोंकण रेलवे में दिनांक 16.09.2020 को आयोजित हिंदी निबंध प्रतियोगिता में भाग लेते हुए प्रतिभागी।



रेल अंचलों से



पश्चिम-मध्य रेलवे द्वारा राजभाषा पखवाड़ा-2020 के दौरान आयोजित क्षेत्राकास की 50वीं (स्वर्णजयंती) बैठक में 'राजभाषा स्मारिका' का विमोचन करते हुए महाप्रबंधक, श्री शैलेन्द्र कुमार सिंह तथा विभाग प्रमुख।

राजभाषा हिंदी के सराहनीय एवं सर्वाधिक प्रयोग के लिए प्रधान मुख्य वाणिज्य प्रबंधक को राजभाषा शील्ड प्रदान करते हुए श्री शैलेन्द्र कुमार सिंह महाप्रबंधक, पश्चिम-मध्य रेलवे



दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे, नागपुर मंडल के राजनांदगांव स्टेशन पर आयोजित राजभाषा प्रदर्शनी का निरीक्षण करते हुए प्रधान मुख्य विद्युत इंजीनियर।



रेल अंचलों से



महाप्रबंधक की अध्यक्षता में कोर/प्रयागराज की परियोजनाओं के साथ आयोजित क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक का दृश्य।

दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे, बिलासपुर मंडल की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक का दृश्य।



रेडिका, कपूरथला में दिनांक 14.09.2020 से 19.09.2020 तक हिंदी सप्ताह के दौरान हिंदी निबंध प्रतियोगिता के आयोजन का दृश्य।



एक जंग : कैसर के संग

मराठी साहित्य में एक सिद्धहस्त एवं सफल महिला साहित्यकार के रूप में श्रीमती मंदाकिनी गोगटे ने पर्याप्त ख्याति अर्जित की है। श्रीमती मंदाकिनी गोगटे मूल रूप से कहानीकार हैं। यह बात अलग है कि हिंदी जगत संभवतः उनसे परिचित नहीं है, क्योंकि उनकी कृतियों के हिंदी अनुवाद पढ़ने में नहीं आए हैं।

श्रीमती मंदाकिनी कमलाकर गोगटे का जन्म मुंबई में 16 मई सन 1936 को हुआ था। उन्होंने श्रीमती नाथीबाई दामोदर ठाकरती महिला विश्वविद्यालय, मुंबई, जो एस.एन. डी.टी. यूनिवर्सिटी के नाम से विख्यात है, से स्नातक की उपाधि प्राप्त की थी, लेकिन इसके पूर्व उन्होंने चित्रकला शिक्षक का प्रशिक्षण भी प्राप्त किया था। लघुकथाओं के माध्यम से अपनी साहित्यिक यात्रा का प्रारंभ करने वाली श्रीमती गोगटे बाद में अपनी व्यंग्य कथाओं एवं बाल साहित्य के कारण चर्चा में आईं।

गंध मातीचा (मिट्टी की गंध), ढळता दिवस (ढलता हुआ दिन), प्रेमाच्या होड्या (प्रेम की कश्तियां), बायकांचं गणित (औरतों का गणित), मुंबईच्या रंगी बेरंगी मुली (मुंबई की रंगबिरंगी लड़कियां), सवत माझी लाडकी (मेरी प्रिय सौतन), इस कृति पर इसी नाम से मराठी में एक फिल्म भी बनी, जो काफी लोकप्रिय हुई थी, आदि उनके कहानी-संग्रह हैं। दीपाली, गाणारं घर (गानेवाला घर), गागी, भैरवी, मोठी वेगळी पाऊल वाट (अलग-सी बड़ी पगडंडी), रसिक बलमा, ह्या कातर उत्तररात्री (ये व्याकुल रातें) आदि उनके उपन्यास हैं। इसके अलावा उन्होंने यात्रा वृत्तांत भी लिखे हैं, जैसे आमची पण सिंदबादची सफर (हमने भी की सिंदबाद की यात्रा), त्या फुलांच्या सुंदर प्रदेशात (फूलों के सुंदर देश में)। उनका बाल साहित्य विशेष लोकप्रिय रहा है—चिमाजी अप्पाची मिशी (चिमाजी अप्पा की मूंछें), शानदार कथा, भाग 1 एवं 2, जांबो जांबो ग्वाना, प्रेमा पुरवः क्रांतिकारी अन्नपूर्णा, बोले तैशी चाले (जैसे बोल वैसी चाल), महंमद

घोरी ची सांगली (मोहम्मद गोरी की सांगली), सर्पाची अजब दुनिया (सांपों की विभिन्न दुनिया)।

पिछले दिनों श्रीमती मंदाकिनी गोगटे के एक उपन्यास को पढ़ने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, शीर्षक था—“गागी”। गागी अर्थात् गंगा की धारा पर निवास करने वाली। यह सत्य घटना पर आधारित एक उपन्यास है। अब तक कुछ ऐसी कविताएं, कहानियां, साक्षात्कार, लेख परिचर्चाएं एवं उपन्यास हिंदी, अंग्रेजी एवं मराठी में पढ़ने का अवसर प्राप्त हुआ है, जिनमें कैसर जैसे भयावह रोग पर विजय प्राप्त कर रोगी स्वस्थ हुए हैं, ऐसे अनेक व्यक्तियों से वार्तालाप भी हुआ है, जिन्होंने कैसर का डटकर सामना किया है, लेकिन बहुत कम ऐसे हैं, जो पूरी आयु पाकर इस दुनिया से विदा हुए हैं। यहां ‘पूरी आयु’ शब्द पर विवाद हो सकता है, क्योंकि कोई तो तीस साल की उम्र में चल बसता है और कोई शतक के निकट पहुंचने वाला होता है। “बाबू मोशाय... जिंदगी बड़ी होनी चाहिए, लंबी नहीं।” मैंने अपने जीवन में नागपुर मेरे घर पर अपनी मौसी को कैसर से लड़ते एवं हारते देखा है, तो पुणे में अपनी सहकर्मी को पूरी ताकत के साथ कैसर से जूझते देखा है। मेरे स्मृति पटल पर अंकित इन दो मौतों ने मुझे ‘गागी’ को बार-बार पढ़ने पर विवश किया है।

आपने एक नाम जरूर सुना होगा—अरुणा विकास। आठवें एवं नवें दशक में श्री विकास देसाई एवं श्रीमती अरुणा राजे ने हिंदी में शक, अंधी गली, गहराई एवं सितम जैसी कलात्मक फिल्मों दी, तो मराठी में आट्या पाट्या, अनंत यात्रा आदि।

श्री अनंत शिवाजी देसाई टोपीवाले मुंबई की बहुत बड़ी हस्ती थे। मूलतः महाराष्ट्र के कोंकण इलाके के देसाई ने मुंबई में महाराष्ट्रीयन टोपी बनाने का काम प्रारंभ किया एवं कालांतर में उनकी गणना मुंबई के बड़े व्यवसायियों में होने लगी। किसी जमाने में मुंबई में उनकी अनेक चाले (एक



कमरे के छोटे-छोटे बहुमंजिली मकान) हुआ करती थी। वर्तमान में मुंबई के नायर अस्पताल से संलग्न जो मेडिकल कॉलेज है, उसकी स्थापना के लिए उस जमाने में श्री देसाई ने बहुत बड़ी धनराशि दान की थी, इसलिए आज भी उस कॉलेज का नाम टोपीवाला ही है। सुप्रसिद्ध संगीतकार श्री वसंत देसाई इसी देसाई खानदान से थे। श्री विकास देसाई, श्री अनंत शिवाजी देसाई के पौत्र हैं। विकास एवं अरुणा की मुलाकात पुणे के फिल्म इंस्टीट्यूट (एफ.टी.आई.आई.) में प्रशिक्षण के दौरान हुई, मुलाकात प्रेम में बदली और प्रेम शादी में। 'गागी', देसाई दंपति का प्रथम कन्या रत्न थी।

वैसे देखा जाए तो गागी उपन्यास नहीं है, लेकिन जैसे-जैसे हम आगे पढ़ते जाते हैं, हमें उपन्यास-सा आनंद आने लगता है, यह लेखिका की खासियत है। यदि पात्रों के वास्तविक नाम बदल दिए जाते, तो यह एक उपन्यास ही होता। पाठक जैसे-जैसे आगे पढ़ता है, शोकगाथा में डूबता चला जाता है। सात-आठ वर्ष की एक सुंदर, कुशाग्र एवं मधुर भाषी लड़की किस प्रकार मौत से लड़ती है... लड़ते-लड़ते मौत से हारती है। यह सारा सब कुछ पढ़ते-पढ़ते मन दर्द से कराहने लगता है। लेकिन साथ ही साथ मौत से उसका संघर्ष एवं अपरिमित धैर्य हमें बहुत कुछ सिखा जाता है, शायद यही कारण है कि इस शोकगाथा को बार-बार पढ़ने का मन करता है।

अत्यंत लावण्यमयी, समझदार एवं हमेशा मुस्कुराते रहने वाली गागी को बचपन से ही नृत्य का बहुत शौक था। पढ़ाई के साथ-साथ नृत्यकला का प्रशिक्षण भी चलता रहता है और गागी प्रगति की सीढ़ी-दर-सीढ़ी चढ़ती रहती है और... और... एक दिन नृत्य का आधार स्तंभ उसका पैर काट दिया जाता है, कैंसर के कारण... और शुरू होती है एक जंग-कैंसर के संग। इस जंग में उसका साथ देते हैं— अरुणा, विकास, दादा, दादी एवं फिल्म जगत के अनेक कलाकार जैसे गुलज़ार, जगजीत सिंह, चित्रा सिंह, नसीरुद्दीन शाह, स्मिता पाटिल, गिरीश कर्नाड एवं जया तथा अमिताभ... क्योंकि अमिताभ की जया से शादी करवाने में अरुणा एवं विकास ने महती भूमिका

का निर्वहन किया था। श्वेता एवं अभिषेक बच्चन गागी के प्रत्येक जन्मदिवस पर कैम्ब्रिज कोर्ट, पेडर रोड (गागी के घर) आया करते थे। यह एक दुखद संयोग ही है कि जिस समय 'कुली' फिल्म के सेट पर अमिताभ घायल होने के बाद अस्पताल में भर्ती थे, उसी समय गागी को भी कैंसर का पता चला था। दोनों का संघर्ष साथ-साथ चला। एक जीत गया, एक हार गई लेकिन दोनों ने मौत का मुकाबला डटकर किया। यह उपन्यास इस सामूहिक संघर्ष का एक प्रखर एवं दिल को दहला देने वाला वर्णन है, जिसमें ईश्वर के अस्तित्व पर प्रश्नचिन्ह लगता है, तो अंत में उसकी सत्ता पर पूर्ण विश्वास का प्रकटन भी हो जाता है।

नृत्य की दुनिया में प्रगति पथ पर अग्रसर होने का स्वप्न देखने वाली मासूम गागी सोचती है कि यदि मेरा पैर ठीक नहीं हो पा रहा है, तो उसे रखने से क्या फायदा? दर्द... दर्द और सिर्फ दर्द ही तो दे रहा है मेरा यह पैर। अपने स्वप्नों को आग में झोंककर वह स्वयं डॉक्टर को अपना पैर काटने को कहती है और वह पैर, जो कभी स्टेज पर थिरककर अपना जलवा दिखाता, काट दिया जाता है। नियमानुसार श्मशान में ले जाकर उसे जला दिया जाता है लेकिन वह कटा हुआ पैर भी गागी को दर्द का अहसास कराता रहता है, जिसे 'फैंटम पेन' कहते हैं।

मृत्यु से कुछ दिन पूर्व गागी सोचती है— 'कहां है ईश्वर?' अपनी धर्मपरायण दादी से पूछती है, "नन्ना! कैसे हैं तुम्हारे ये ईश्वर? तुम दिन-रात इनकी सेवा में लगी रहती हो। मुझे ठीक करने की मिन्नतें करती रहती हो, लेकिन ईश्वर तो तुम्हारी कुछ सुनते ही नहीं है।"

अब यह साफ दिखाई देने लगा था कि मौत ने दस्तक देना प्रारंभ कर दिया है। किसी भी समय गागी अलविदा कह सकती है। मृत्युशैया पर ही उसके बिलकुल पास बैठी हुई अरुणा सोच रही थी कि गागी तो अब चली ईश्वर के पास... लेकिन ईश्वर के प्रति ईर्ष्याभाव मन में रखकर। यह ठीक नहीं, ऐसा नहीं होना चाहिए। इस अंतिम दृश्य के चित्रण में लेखिका ने जिस कौशल का परिचय दिया

है, उससे पत्थर भी पिघल जाएगा। अंतिम सांस... और अचानक गागी के मन में ईश्वरीय श्रद्धा का उदय होता है और वह कहती है, “जरा भभूत तो देना।” और इस हृदयद्रावक दृश्य में भी सबके चेहरों पर संतोष एवं आश्वस्ति की एक झलक दिखाई दे जाती है। मुक्ति का निःश्वास... चलो! गागी ने ईश्वर से समझौता कर लिया। गागी को पता था कि वह ईश्वर के पास जा रही है। बंद आंखों से भी वह उसकी ओर बढ़ते मौत के कदमों को देख पा रही थी। मौत की पदचाप उसे स्पष्ट सुनाई दे रही थी। धीरे-धीरे कदमों की आवाज एकदम पास आ गई, बिलकुल पास। गागी थक गई, निढाल हो गई। ममा... आई एम डाईंग।

उपन्यास में कुछ प्रसंग तो अत्यंत मार्मिक बन पड़े हैं, जिनमें उपन्यास कला के दर्शन होने के साथ ही लेखिका की भावप्रवणता, लालित्यपूर्ण वर्णन शैली, विषय के गहन ज्ञान, अनुभव एवं भाषा सौष्ठव का परिचय प्राप्त होता है। उन कुछ प्रसंगों का अनुवाद यहां देना समीचीन होगा।

(1)

सात-आठ दिनों के बाद विकास डॉ. चितले के पास बायप्सी की रिपोर्ट लेने के लिए गया।

अरुणा ने भारी मन से उसे विदा किया।

अरुणा ऊपरी तौर पर यह दिखाने का प्रयास कर रही थी कि सब कुछ सामान्य है लेकिन अंदर ही अंदर उसका मन चीख-चीखकर रो रहा था।

प्रारंभ के दोनों एक्सरेज में कुछ भी दिखाई नहीं दिया, क्योंकि जहां ट्यूमर था, वहां दर्द ही नहीं होता था, ट्यूमर वाली जगह का एक्स-रे नहीं निकाला गया था, सिर्फ पेर के एक्स-रे निकाले जाते थे। अब जांघ में सूजन आ गई थी एवं दर्द होने लगा था तथा गांठ के समान कुछ अनुभव होने लगा था। बायप्सी का सैम्पल ‘टाटा’ में भी भेजने को कहा गया। ‘टाटा’! कुछ अजीब-सा लग रहा था। ट्यूमर किस प्रकार का होगा?

विकास रिपोर्ट लाने के लिए सुबह ही डॉ. चितले के पास चला आया था। उसके घर लौटने तक अरुणा की

बेचैनी बनी रही। मन ही मन ईश्वर का जाप चल रहा था। ट्यूमर ‘बेनिग्नैट’ होना चाहिए। साधारण ही होगा। ‘मेलिग्नैट’ नहीं होगा। लेकिन उसका दिल डूबा जा रहा था। मन भय के बोझ तले दबा जा रहा था। विकास ने उसे दो बार दिलासा भी दिया था, पर ‘टाटा’ का नाम सुनते ही कैंसर का विकराल रूप सामने दिखाई देने लगता है। ऊं... हूं... उसे कुछ भी नहीं सोचना चाहिए।

डॉ. चितले ने विकास के हाथों पर रिपोर्ट रख दी। विकास ने खोलकर पढ़ना शुरू कर दिया।

“इविंग सार्कोमा। व्हाट इज दिस?” उसे कुछ भी समझ में नहीं आया, तो उसने डॉ. चितले से पूछा।

“बोन कैंसर।” डॉक्टर ने बहुत शांत स्वर में कहा।

“इतनी कम उम्र में।” विकास ने अविश्वास से पूछा।

“कैंसर दस माह के बच्चे को भी हो सकता है। पर आप चिंता न करें। अब कैंसर लाइलाज नहीं रहा। लेकिन प्लीज अब आगे क्या करना है... जरा जल्दी से करें, देर न करें, समय बीता जा रहा है।” डॉक्टर चितले मुश्किल से कह पाए।

(2)

पैर का दर्द असहनीय होता जा रहा था। गागी बड़ी मुश्किल से उसे सहन कर पाती थी। एक दिन उससे रहा नहीं गया। कातर स्वर में उसने कहा, “ममा, ये मुझे क्या हो रहा है?”

अरुणा से कोई उत्तर न बन पड़ा।

गागी ने एक दिन विकास से पूछा— “क्या मैं मर जाऊंगी?”

“ये जो सारे प्रयास किये जा रहे हैं, तुम्हें बचाने के लिए ही तो किये जा रहे हैं। मुझे बिलकुल नहीं लगता कि आज तुम मर जाओगी। कल का मुझे पता नहीं।” विकास ने कहा। उसकी समझ में कुछ भी नहीं आ रहा था।

(3)

“मेरा पैर ठीक नहीं हो पा रहा है और इस कारण मैं घर में भी टहल नहीं पा रही हूं।”

“हूं... तो इस पैर को फेंक दो।” साइकॉलॉजिस्ट



डॉ. असीत सेठ ने तपाक से कहा।

गागी पैर काटने का विचार भी सहन नहीं कर पाई। वह नाराज़ तो नहीं हुई, पर कोई उसके सामने उसका ही पैर काटने की बात करें, इस बात का उसे बहुत बुरा लगा। उसने अरुणा को अपने पास बुलाया और बहुत धीमी आवाज़ में कहा, “ममा, देखो तो ये क्या कह रहे हैं? उनसे कहो कि मेरे सामने इस प्रकार की बातें न करें।” गागी के चेहरे पर भीषण दुःख की छाया थी।

तब अरुणा ने अत्यंत कोमलता से कहा—“गागी बेटा, तुम्हारा पैर तो ठीक नहीं हो पा रहा है और इसकी वजह से तुम्हें लगातार तकलीफ भी हो रही है। इसे हम निकाल देंगे तो तुम स्विमिंग भी कर सकती हो। हम डिजनीलैंड भी जा सकते हैं। सब कुछ सिर्फ तुम पर निर्भर है। तुम कहोगी तो रहने देंगे, निकालने को कहोगी तो निकाल देंगे।” अरुणा ने बेहद पीड़ा के साथ उसे किसी तरह समझाने का प्रयास किया।

गागी अत्यंत निराश हो गई और उसने अत्यंत कातर स्वर में कहा—“रखकर भी क्या फायदा? निकाल ही दो इसे।”

“बेटा, जैसा तुम कहोगी, वैसा ही करेंगे।”

(4)

गागी की खुराक क्रमशः घटकर बहुत ही कम रह गई थी। स्टेरॉयड इंजेक्शन के कारण वह रात दो बजे तक जागती रहती थी। अरुणा और विकास उसके सिरहाने एवं पैताने बैठे रहते थे। एक रात गागी ने विकास से पूछा—“डैड, मिरिकल क्या होता है?”

“गागी, मैं तुम्हें बचपन से ही कहानियों में मिरिकल के बारे में बताता आ रहा हूँ।”

“हूँ... कहानियों में न, यानि कि वास्तविकता में नहीं न।”

“तुम ऐसा क्यों सोच रही हो?”

“कहानियों में होने वाले चमत्कार यदि असली जिंदगी में होते हैं, तो मेरे जीवन में कोई चमत्कार क्यों नहीं हो रहा है?”

विकास के लिए इस सवाल का उत्तर देना बड़ा मुश्किल था, उसने पीछा छुड़ाते हुए कहा—“पुराने जमाने में चमत्कार ज्यादा हुआ करते थे, आजकल उतने चमत्कार नहीं होते।”

“नहीं। ये सिर्फ किस्से-कहानियां हैं। ईश्वर आदि क्या हैं? पुराने जमाने में लोगों द्वारा लिखे हुए किस्से... कहानियां।”

“ऐसा क्यों कहती हो?” विकास के पास कोई जवाब नहीं था।

“किस्से-कहानियों में सुपरमैन रास्ते पर दौड़ती हुई कारों को रोक लेता है, हवा में उड़ता है, बिल्डिंगें गिराता है, जो कुछ ईश्वर करता है, वह सुपरमैन भी कर सकता है, पर सुपरमैन केवल कहानियों में वर्णित एक चरित्र है। फिर ऐसा भी तो हो सकता है कि पुराने जमाने में लोगों ने ऐसे ही किस्से गढ़े होंगे और आप लोग उन्हें ईश्वर मानने लगे। कुछ दिनों बाद हमारे बच्चे सुपरमैन को ईश्वर मानने लगेंगे।”

अरुणा एवं विकास की बोलती बंद हो गई। गागी की सोच अपनी उम्र के हिसाब से बहुत आगे की थी। बाद में तो गागी को ईश्वर से चिढ़-सी होने लगी। वह दादी से कहती, “ये तुम्हारे देवता हैं? तुम दिन-रात उनकी सेवा में लगी रहती हो। मुझे ठीक करने के लिए मिन्नतें करती हो। पर देवता तुम्हारी कुछ सुनते ही नहीं हैं।”

(5)

“ममाSSS ... आई एम डाईंग।”

“गागी, ऐसा नहीं कहते।”

“ममा, मैं ठीक से साँस नहीं ले पा रही हूँ। मुझे कोई दवाई दे दो न।”

“रूको, तुम्हें मारफीन का इंजेक्शन देती हूँ, पर दो मिनट ठहर जाओ। डैडी को आने दो जरा।”

“डैडी, डैडी कम सूना।”

“डैडी, डैडी कम सूना।”

गागी की जान डैडी में अटकी हुई थी, पर जीवन ज्योति बुझती जा रही थी।

साँस लेने में परेशानी होने लगी।



परेशानी बढ़ती जा रही थी।
साँसे टूट रही थी। दम घुट रहा था।
“डैडी, डैडी कम सून।”

एक साँस
आधी साँस
पौन साँस

अरुणा ने गागी की नब्ज थाम ली।

गागी की आँखें खुली तो खुली ही रह गई। अरुणा ने घबराकर उसकी पलकें मूँद दी। नब्ज देखी... बहुत हल्के से चल रही थी। तभी विकास ने बिजली की गति से कमरे में प्रवेश किया।

“गागी बेटा।” विकास ने अंतरात्मा की गड़राई से पुकारा।

होंठों के किनारों पर हल्की मुस्कुराहट दिखाई दी।
मधुर, स्निग्ध, प्रेम में पगी।

चली गई? कि कोमा में है। संभ्रम।

डॉक्टर को बुलाया गया। डॉक्टर आए।

वह मुस्कुराहट अंतिम थी... विजयी मुस्कुराहट।

(6)

अरुणा एवं विकास ने पुणे में ‘सितम’ की शूटिंग समाप्त की। एक दृश्य था... विनी (गागी) की मुलाकात जब राहुल (गागी का सगा छोटा भाई हीथ) से होती है, तो वह पूछता है, “तुम्हारे घर में कोई मर गया है क्या?”

“क्यों?” गागी को कुछ भी समझ में नहीं आता है। यह शूट 23 जुलाई, 1982 को किया गया और ठीक एक साल बाद यानी 23 जुलाई, 1983 को गागी ने आखिरी साँस ली।

“तुम्हारे घर में कोई मर गया है क्या?” इस प्रश्न का अर्थ समझाने के लिए ईश्वर ने गागी को मौत का प्रत्यक्ष अनुभव कराया।

और नियति का खेल देखिए कि कैंसर के संग गागी की जंग को दुनिया के सामने लाने वाली मर्मस्पर्शी लेखिका श्रीमती मंदाकिनी गोगटे का दिनांक 15 जनवरी, 2010 को कैंसर से निधन हो गया।

विपिन पवार

निदेशक, राजभाषा, रेलवे बोर्ड

कविता

औरत

रात को बाहर जाने को क्यों, हम बस औरत को रोकते हैं,
क्यों हम हर बार अखबार में खबर पढ़कर, बस औरत को ही टोकते हैं।

गलती क्या है उसकी, कि उसने जन्म दिया लड़कों को,
बदले में लड़कों ने बदनाम किया है बस दिल्ली की सुनसान सड़कों को।

जिसकी इज्जत से खेला है वह सिर्फ औरत नहीं,
एक मां है, बहन है और एक बेटा है,

आज तेरी वजह से ही वो एक बार फिर आंखों में आंसू लेकर लौटी है।

उसके आंसुओं का कर्ज है तुझ पर, अब तू उसे कैसे चुकाएगा?

उसकी इस जिंदा लाश को तू, अब वापिस एक इंसान कैसे बना पाएगा?

मुझे पता है कि कोशिश करेगा तू भागने की,
पर कुछ ऐसा लिखूंगा कि तू भाग भी नहीं पायेगा।

मैं सिर्फ कोई आम कवि नहीं, लोगों की आवाज़ हूँ,
अब तू मुझे कैसे झुठलाएगा।

अब इतना भर कुछ लिखूंगा कि तुझे आएगी शर्म,
और खुद आएगा जनता के सामने

और मांगेगा माफी उसके लिए, जो कर्म तूने किए।

माफी मांगकर भी चेहरा तू छुपाकर ही जी पाएगा,
शर्म के मारे किसी रात, तू खुद ही मर जाएगा।

—राहुल पुराकायस्थ

पुत्र श्रीमती सुनीता पुराकायस्थ,
सहायक निदेशक राजभाषा, रेलवे बोर्ड



सुख

वह अपनी बीमार बहन को देखने उसके घर गया था। घर से नाश्ता-पानी करके निकला था और सोचा था कि दोपहर को जल्दी लौट आएगा ताकि उन्हें उसके कारण अकारण ही रोटी-पानी के लिए परेशान न होना पड़े। घर में चौका-चूल्हा संभालने वाला उसकी बहन के सिवा कोई था भी नहीं वह अपनी बहन के पास बैठा था पास-पड़ोस के लोग भी आ-जा रहे थे। भोजन का समय होने को था और वह वहां से चलने का मन बना ही रहा था कि उसके जीजाजी ने उसे भोजन करने का निमंत्रण दे डाला। बहुत मना करने पर भी उसे बैठना पड़ा।

भोजन के लिए मेज पर दो सब्जियां, दाल, चावल, सलाद और फूलके देख कर वह दंग रह गया सहज ही उसके मुंह से निकला, “इतना खाना? यह किस ने बनाया है....या बाहर से मंगवाया है?” “पर इतनी चीजें न तो एक साथ बनाई जा सकती हैं और न मंगवाई”, वह सोच रहा था उसकी बात सुन कर एवं चेहरे के भाव देख कर उसके जीजा जी मुस्कुरा दिए, “साले साहब, इतना हैरान-परेशान मत होओ न तो यह खाना घर पर बनाया गया है और न ही बाहर किसी होटल-ढाबे से मंगवाया गया है।”

“तो फिर.....?” उसने जिज्ञासा से पूछा जीजा जी कृतज्ञता एवं गर्व मिश्रित स्वर में बोले, “भई यह हमारे मोहल्ले की परम्परा और चलन है कि जिसके घर में जो कुछ भी बनता है, सब एक दूसरे की पसंद-नापसंद के हिसाब से एक-दूसरे को आदान-प्रदान करते रहते हैं। सुख में, दुःख में एक दूसरे के काम आते हैं और कोई भी काम हो मिल जुल कर हाथ बंटाते हैं। यही परम्परा हमारे मोहल्ले की एकता, प्रेम और भाईचारे का प्रतीक है जो हमें एक दूसरे से बखूबी जोड़े हुए है और चूंकि तुम्हारी बहन बीमार है, तो यहां का काम-काज और देखभाल भी यही लोग कर रहे हैं इनके रहते हमें कोई कष्ट नहीं है। देख ही रहे हो तुम कि खाने में इतनी विविधता मिल रही है।”

“वाकई जीजा जी, यहां खाना खाना तो किसी अच्छे

होटल में खाना खाने को भी मात दे रहा है”, उसे लगा कि अचानक उसे बहुत तेज भूख लग आई है, वह सोच रहा था, ‘ऐसा प्रेम-प्यार, एकता और भाईचारा यदि हर मोहल्ले के लोगों में एक दूसरे के प्रति हो तो कितना अच्छा हो और सभी लोग कितने सुख और आराम से रहें।’

—पंकज शर्मा

—प्लेट नं.-19, सैनिक विहार, जण्डली,
अम्बाला शहर, हरियाणा

कविता



जिंदगी एक रेलगाड़ी

रेलगाड़ी-सी ये जिंदगी,
जब खुशियों का दौर होता,
तो तेजी से भागती,
जब गम के बादल छाते,
तो सुस्त सी पड़ जाती।
मिलते हैं इस सफर में कई हमसफर,
कुछ पहले छोड़ जाते,
कुछ दूर तलक साथ निभाते हैं।
कुछ रिश्ते बन जाते हैं,
कुछ मुद्दे बन जाते हैं।
तनावग्रस्त जब होता ये दिमाग,
तो मानो,
इस जिंदगी की चेन पुलिंग-सी हो जाती।
मंजिल तक पहुंचना,
मकसद होता इस सफर का,
कई मंजिल तक पहुंच जाते,
कई मंजिल बदल जाते हैं।

—सूर्या मिश्रा

कनिष्ठ अनुवादक, रेलवे बोर्ड

“हमारी कौमी जबान हिंदी ही हो सकती है।”

—श्रीमती सरोजिनी नायडू

राहत इंदौरी का जाना

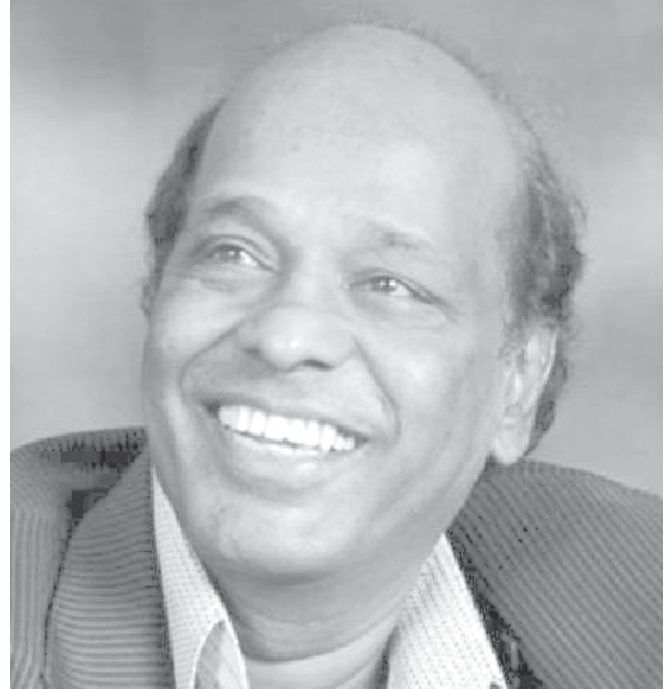
इस साल कोरोना ने कई उल्लेखनीय कवि, कलाकारों को हमारे बीच से उठा लिया। राहत इंदौरी उनमें एक बड़ा नाम हैं। कोरोना फेफड़े को कमजोर करता हुआ दिल पर असर डालता है और राहत इंदौरी का संवेदनशील शायर दिल इस हमले को नहीं झेल सका, हालांकि कोमलता और समर्पण की बजाय सख्ती और गर्व उनकी शायरी की ज्यादा बड़ी पहचान हैं। हिंदुस्तान में अपने कौम की हैसियत और नियति तलाशने वाले इस शायर की रूह इस साल हिंदुस्तान की आजादी के दिन से चार दिन पहले 11 अगस्त, 2020 को दुनिया से आजाद हो गई। उन्हें दिल का बड़ा दौरा पड़ा और अल्लाह ने अपने नेक बंदे को वापस बुला लेने में देर न लगाई— उससे उसकी और जुदाई उससे बरदाश्त न हो सकी। सत्तर साल की उम्र इस जमाने में कोई जियादह तो नहीं। बीमारी और मौत के आगे किसी की चली है? उसका जम्हूरी पंजा शायर हो या श्रोता, लेखक हो या पाठक, प्रतिभावान हो या सामान्य सब पर एक जैसी ‘मेहरबानी’ करता है।

राहत साहब पेशे से प्रोफेसर थे, अच्छे पेंटर भी रहे, उनके बनाए कुछ पोस्टर प्रसिद्ध भी हुए। लेकिन उनकी जगह उर्दू शायरी ही है— खासकर गजल की विधा। आधुनिक उर्दू गजल की चर्चा उनके बगैर अधूरी रहेगी। उनकी गज़लें पठनीय हैं, उनमें चुटीलापन हैं, तत्काल अर्थ-बोध कराकर चमत्कृत करने की क्षमता है, शेर में कुछ नया कहने की जो चुनौती होती है उसका लगभग हमेशा निर्वाह है। इस कारण मुशायरों में उनकी खासी मांग थी। ‘अंदाजे बयां’ का अनूठापन उनकी शायरी में ही नहीं, मंच पर अदायगी में भी थी, जो श्रोताओं का भरपूर मनोरंजन करती थी और उनमें अगली पंक्ति सुनने की बेताबी जगाती थी। उनके प्रशंसक लाखों में हैं। (हिंदी कवियों के लिए ऐसी लोकप्रियता तो सपना ही है।) उनके कई शेर तो ऐसे हैं कि लोगों की जुबान पर चढ़कर कहावतों का रूप ले चुके हैं, जैसे कि—

“दोस्ती जब किसी से की जाए
दुश्मनों की भी राय ली जाए”

“न हम-सफ़र न किसी हम-नशी से निकलेगा
हमारे पांव का कांटा हमी से निकलेगा”

“उसी की याद आई है सांसों ज़रा आहिस्ता चलो
धड़कनों से भी इबादत में खलल पड़ता है”



उन्होंने फ़िल्मों के लिए भी सुंदर गीत लिखे। उनके गाने और अशआर लोगों के बीच बहुत ही लोकप्रिय हुए हैं। उनकी संघर्षपूर्ण जिंदगी से निकले अनुभव और समझ पाठक को दुनिया की खुरदरी वास्तविकता से रू-ब-रू कराते हैं। उनकी शायरी का दायरा बड़ा है, उसमें जिंदगी और जहान की बहुरंगी तस्वीरें हैं— खासकर अपने देश में मुसलमानों के दर्द, आक्रोश, असुरक्षा बोध और दावों की प्रबल अभिव्यक्ति है। मुनव्वर राणा में अगर विभाजन से रिश्ते-नाते, पास-पड़ोस, बचपन आदि के खोने का दर्द और अफसोस है तो राहत इंदौरी में इसी जमीन के होने का दावा, भारत में शानदार मुस्लिम अतीत का गर्व, वर्तमान स्थितियों पर क्रोध, व्यंग्य, ललकार, हास्य आदि का स्वर प्रमुख है। इन विषयों पर लिखी उनकी गजलों ने सबसे अधिक लोकप्रियता पाई, उनकी पहचान बनीं। उनकी एक प्रसिद्ध गजल नीचे प्रस्तुत है— आप उसमें उनके आक्रोश और लगभग धमकी के स्तर को छूते आत्मविश्वास को देखें—

“अपनी पहचान मिटाने को कहा जाता है
बस्तियां छोड़ के जाने को कहा जाता है
पत्तियां रोज़ गिरा जाती हैं ज़हरीली हवा
और हमें पेड़ लगाने को कहा जाता है।”



“घरों के धंसते हुए मंज़रों में रखे हैं
बहुत से लोग यहां मक़बरों में रखे हैं
हमारे सर की फटी टोपियों पे तंज़ न कर
हमारे ताज अजायबघरों में रखे हैं।”

“उठा शमशीर, दिखा अपना हुनर, क्या लेगा
यह रही जान, यह गर्दन है, यह सिर, क्या लेगा
सिर्फ एक शेर उड़ा देगा परखचे तेरे
तू समझता है कि शायर है, क्या कर लेगा?”

उनकी ललकार भरी पंक्तियां ‘किसी के बाप का हिन्दोस्तान थोड़ी है’ ने सोशल मीडिया पर काफी धूम मचाई। इसका शेर अभी हाल में देश में हुए सीएए-एनआरसी विरोध के आंदोलन का प्रतीक बन गया था-

“सभी का खून है शामिल यहां की मिट्टी में
किसी के बाप का हिन्दोस्तान थोड़ी है॥”

इसका जवाब भी किसी ने उतनी ही तुरन्ती-तेजी से दिया था।

“मेरे पुरखों ने सींचा है लहू के कतरे से
बहुत बांटा, मगर अब बस, खैरात थोड़ी है॥”

“अरे ओ देश की संपत्ति जलाने वालों
नहीं शामिल तुम्हारा खून इस मिट्टी में
ये तुम्हारे बाप का हिन्दोस्तान थोड़ी है॥”

मैं खोज रहा था कहीं इन चीजों को लेकर उनमें अपने अंदर भी झांकने की कोशिश है? नहीं, ज्यादातर मुसलमान लेखकों में नहीं है। अगर दर्द है, असुरक्षा है, दूसरों के द्वारा अपेक्षा या घृणा मिल रही है तो इसके कुछ कारण अपने अंदर भी होंगे। लेकिन आत्मविश्लेषण की फितरत उनके बंद समाज में बहुत कम है। उनके लिए दोषी हमेशा ‘बाहरी’ हैं, राहत साहब का आक्रोश भी बाहरी के प्रति ही है। वैसे यह जरूरी नहीं कि कवि कारणों के पड़ताल की भी ओर जाए, वह पीड़ा या दर्द को सच्ची अभिव्यक्ति दे दे, यह भी कविता के लिए बहुत हैं। लेकिन कविता में यह कमी भले न हो, कवि से इसकी एक वाजिब उम्मीद होती ही है।

निदा फाजली इस कमी से ऊपर उठते हैं, वे बड़े शायर हैं। कई बड़े शायर ऐसा करते हैं।

राहत इंदौरी को हिंदी जगत ने बहुत प्यार दिया है। काश, ऐसा प्यार उर्दू जगत भी हिंदी कवियों को देता। लेकिन हमारे समाज में बहुत सारी चीजें इकतरफा हैं। राहत साहब की बुलंद शायरी हमेशा याद की जाएगी। कोई कवि पूरी मानवता न सही, उसकी भाषा जिन तक पहुंचती है उस पूरे वर्ग के लिए सहेजने और प्यार देने लायक तो होता ही है। उनका जाना उनकी भाषा और समाज के लिए बहुत एक बड़ी क्षति है।

-डॉ. वरुण कुमार

-निदेशक, केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान,
राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय

कविता

परचम

जब भी कहीं यह परचम लहराता है
सर फक्र से ऊंचा हो जाता है।

यह भाग है मेरा, यह मान है मेरा,
यह चाह है मेरी, यह अरमान है मेरा।

मैं कहीं भी रहूँ, कहीं भी जाऊँ,
यह पहचान है मेरी, यह निशान है मेरा।

यह मुझसे है, मैं इससे हूँ,
ना यह मुझसे जुदा, ना मैं इससे जुदा।

गुमराह हुए, या भटके, यह रहबर बन जाता है,
दुश्वारी का हर मरहला पार कर जाता है।

तारीख है कि हमें कभी रास्ता ना मिला,
जब तुम तुम रहे, मैं मैं रहा।

मगर आयाम भी बने, मंजिलें भी मिली,
हर हिंद जब इसके नीचे आ खड़ा हुआ।

-राजेन्द्र कुमार सौंध

-सेवानिवृत्त सीपीटीएम, पूर्वोत्तर सीमा रेलवे

आप जिस नजर से दुनिया को देखेंगे, आपको दुनिया वैसे ही दिखाई देगी।

-सुविचार



उपयोगी विचारों व कार्यों द्वारा ही संभव है समय का सदुपयोग

संसार में बहुत सी चीजें बेहद कीमती होती हैं लेकिन कुछ चीजें ऐसी भी हैं जिनका कोई मूल्य न होते हुए भी वे बेशकीमती हैं क्योंकि उनको पैसों से नहीं खरीदा जा सकता। ऐसी ही एक बेशकीमती चीज है समय। “खोया हुआ धन और कीमती वस्तुएँ वापस मिल सकती हैं, बिगड़े स्वास्थ्य व बिगड़े संबंधों में भी सुधार संभव है, शत्रुता को मित्रता में परिवर्तित किया जा सकता है, नष्ट हुए खेतों को पुनः हरा-भरा बनाया जा सकता है, सुनामी व भूकंपादि प्राकृतिक आपदाओं में ध्वस्त नगरों व गाँवों का पुनर्निर्माण किया जा सकता है, शरणार्थियों का पुनर्वास संभव है, पूरी तरह से नेस्तोनाबूद खण्डहरों का जीर्णोद्धार किया जा सकता है, खोई हुई प्रतिष्ठा भी पुनः प्राप्त की जा सकती है लेकिन समय को किसी भी उपाय से लौटाना संभव नहीं। बीता हुआ समय किसी भी कीमत पर वापस नहीं लाया जा सकता।” समय अमूल्य ही नहीं दुर्लभ भी है और समय किसी की प्रतीक्षा भी नहीं करता। जो समय को नष्ट करते हैं समय उनको नष्ट कर देता है। जो समय की कद्र करते हैं समय पूरे विश्व को उन लोगों की कद्र करने के लिए विवश कर देता है।

समय किसी के साथ भेदभाव नहीं करता। राजा हो या रंक किसी के लिए नहीं ठहरता समय। हर वर्तमान क्षण तत्क्षण भूतकाल में परिवर्तित हो जाता है। अतः वर्तमान समय का और समय के हर क्षण का सदुपयोग करना अनिवार्य है। प्रश्न उठता है कि समय को नष्ट होने से कैसे रोकें? वास्तव में समय नष्ट नहीं होता। समय तो शाश्वत है। बीता समय लौटकर वापस नहीं आता लेकिन हमारा जितना समय बीत जाता है हम ही उतने नष्ट हो जाते हैं। हम समय को नहीं स्वयं को नष्ट कर रहे होते हैं। स्वयं को नष्ट होने से बचाने के लिए समय का सदुपयोग करना अनिवार्य है। समय के महत्त्व को प्रतिपादित करते हुए लोक में अनेक कहावतें व लोकोक्तियाँ प्रचलित हैं। कहा गया है कि:- “अब पछताए होत क्या जब चिड़ियाँ चुग गईं खेत।” तुलसीदास ने कहा है, “का बरखा जब कृषि सुखाने, समय चूकि पुनि का पछिताने।” उर्दू शायर गुलाम हुसैन ‘हसन’ साहब भी फर्माते हैं:

“सदा ऐश दौराँ दिखाता नहीं,
गया वक्त फिर हाथ आता नहीं।”

इसीलिए तो कबीर जहाँ सहजता की बात करते हैं वहीं चेतावनी देते हुए समय के महत्त्व को भी प्रतिपादित कहते हैं :

“काल करै सो आज कर, आज करै सो अब।
पल में परलय होयगी, बहुरि करैगा कब।”

फिर कैसे करें समय का सदुपयोग? इसका सीधा सा उत्तर है टाइम मैनेजमेंट। हर कार्य को योजना बना कर करें। जिस प्रकार स्कूल-कॉलेजों व अन्य शिक्षा संस्थानों में टाइम टेबल बनाकर हर काम योजनाबद्ध तरीके से किया जाता है उसी प्रकार व्यक्तिगत जीवन में भी टाइम मैनेजमेंट या समय प्रबंधन का बड़ा महत्त्व है। सुबह उठने से लेकर शाम को सोने तक के समय अर्थात् दिनचर्या को व्यवस्थित करें। किस समय क्या करना है ये पहले से निश्चित कर लें व उसी के अनुसार कार्य करें तो समय नष्ट होने का प्रश्न ही नहीं उठता। समय का सदुपयोग करने के लिए दिनचर्या के साथ-साथ साप्ताहिक, मासिक व वार्षिक कैलेंडर या इस दौरान किए जाने वाले प्रमुख कार्यों की रूपरेखा बनाना भी उपयोगी रहता है। यदि हमें अपनी दिशा का ही पता नहीं होगा तो लक्ष्य तक पहुँचेंगे कैसे? जीवन में अल्पकालिक ही नहीं दीर्घकालिक लक्ष्यों का निर्धारण भी अनिवार्य है।

दीर्घकालिक लक्ष्य एक दिन में तो पूरे हो नहीं सकते अतः पहले से ही उनकी उचित रूपरेखा बना लेना अनिवार्य है। मान लीजिए आप चाहते हैं कि रिटायरमेंट के बाद आप अपने बगीचे में गुलमोहर के पेड़ के नीचे बैठकर स्वाध्याय करें अथवा अपने बगीचे में लगे आम के पेड़ से ताज़ा-ताज़ा आम तोड़कर खाएँ तो आपको अपने बगीचे में ये पेड़ आज ही लगाने होंगे। उनकी उचित देखभाल करनी होगी। उनमें खाद-पानी देना होगा, उन्हें गर्मी-सर्दी व कीड़े-मकोड़ों से बचाना होगा। तभी वे विकसित होकर समय पर फूल-फल व छाया दे पाएँगे। तभी आप अपने लक्ष्य की पूर्णता तक पहुँच सकेंगे। उचित योजना के अभाव में लक्ष्य की प्राप्ति संभव ही नहीं। पूर्ण सफलता के लिए ज़रूरी है योजना बनाकर उस पर निरंतर कार्य करना। यही समय का सदुपयोग है।

यदि आप चाहते हैं कि वसंत ऋतु में आपका आँगन,



बालकनी या टैरेस इंद्रधनुषी रंग के फूलों और भीनी-भीनी गंध से महकता रहे तो आपको इसकी तैयारी पहले से ही करनी होगी। आपको शीत ऋतु से पहले ही बीज बोने पड़ेंगे। बीजों के उगने पर नन्हें अंकुरों व शिशु पौधों की देखभाल करनी होगी, उन्हें पुनः रोपना होगा तब कहीं जाकर हमारी इच्छा पूर्ण हो पाएगी। यदि हमें अंकुरित मूंग, मोठ, चने आदि बनाने हैं तो भी कई दिन पहले से तैयारी शुरू करनी पड़ती है। राजमा, छोले और कई बार तो कई दालें बनाने के लिए भी उनको कई घंटे पहले पानी में भिगोना पड़ता है। दही जमने में भी कुछ समय लगता है अतः इन सब चीजों को ठीक से बनाने के लिए पहले से योजना बना लेना सुविधाजनक व लाभप्रद रहता है। ये सब समय का सदुपयोग ही है।

कई लोग जीवनभर हाड़तोड़ परिश्रम करते हैं। सुबह से शाम तक काम में लगे रहते हैं लेकिन फिर भी जीवन में आगे नहीं बढ़ पाते। जहाँ से शुरू किया था वहीं पर आकर समाप्त हो जाते हैं। सुख-समृद्धि व ऐशो-आराम तो दूर दो वक्त की रोटी का जुगाड़ मुश्किल से हो पाता है। समय के सदुपयोग का वास्तविक अर्थ है सफलता की प्राप्ति। यदि जीवन में अपेक्षित क्षेत्र या क्षेत्रों में सफलता ही नहीं मिल पाई तो समय का सदुपयोग कहाँ हुआ? समय के सदुपयोग का ये अर्थ नहीं कि हम चौबीसों घंटे काम करते रहें। न सोएँ, न आराम करें और न मनोरंजन ही। न तो स्वयं के लिए समय है और न घर-परिवार के लिए ही। जब तक हम पूर्ण रूप से स्वस्थ नहीं होंगे कार्य भी ठीक से नहीं कर पाएँगे। बेशक हम कुछ कार्य कर पाएँ लेकिन उसकी गुणवत्ता उत्तम नहीं होगी। सफलता के लिए कार्यों में गुणवत्ता अनिवार्य है।

जहाँ तक कार्यों में गुणवत्ता अथवा समय के सदुपयोग की बात है वह तभी संभव है जब हम पूर्ण रूप से स्वस्थ व सचेत हों। अच्छे स्वास्थ्य के लिए सबसे ज़रूरी चीज़ है पूरी नींद लेना। उनींदा या निद्रालस व्यक्ति कभी भी मन लगाकर कार्य नहीं कर सकता। उसके कार्य में गुणवत्ता आ ही नहीं सकती। वह उपयोगी हो ही नहीं सकता। वह एक घंटे के कार्य को चार घंटे में करेगा और वह भी आधा-अधूरा। भरपूर नींद लेना व व्यायामादि के लिए समय निकालना अनिवार्य है। जिसके पास स्वास्थ्य के लिए समय नहीं है उसे बीमारियों व खराब स्वास्थ्य से उत्पन्न असफलताओं का मातम मनाने के लिए समय निकालना ही होगा। रात को भरपूर नींद लें और

जो लोग रात को कार्य पर होने की वजह से सो नहीं पाते दिन में पूरी तरह से आराम करें, सोएँ। काम के बाद आराम और आराम के बाद काम ये उत्तम समय प्रबंधन है। इसी से संभव है समय का सदुपयोग।

रात के समय या दिन में पूरी नींद लेना तो अनिवार्य है ही वर्किंग ऑवर्स के दौरान भी बीच-बीच में थोड़ा आराम कर लेना लाभदायक रहता है। दिन में विशेष रूप से दोपहर के बाद एक हल्की सी नींद की झपकी भी कमाल का काम करती है। थोड़े आराम या एक झपकी के बाद हम पुनः तरोताज़ा हो जाते हैं और साथ ही अधिक गति व कुशलता से कार्य करने में सक्षम भी। लगातार काम करने से मनुष्य ही नहीं मशीनें भी थक जाती हैं। उनमें टूटफूट भी स्वाभाविक है। कार्य करते-करते औज़ारों की धार भी कम पैनी हो जाती है जिससे कार्य अपेक्षाकृत धीमी गति से होता है। यदि आप लकड़ी काट रहे हैं और आपकी कुल्हाड़ी खोटी या भोथरी हो चुकी है तो आपको परिश्रम अधिक करना पड़ेगा और लकड़ी देर में कटेगी। बीच-बीच में अपने औज़ारों को दुरुस्त करते रहना भी ज़रूरी है। समय का सदुपयोग तभी संभव है जब कम समय में अधिक व उपयोगी उत्पादन हो सके।

कार्य की गुणवत्ता के साथ-साथ उसकी उपयोगिता भी अनिवार्य है। आज कंप्यूटर व इंटरनेट के ज़माने में टाइपराइटर मशीनों की कोई उपयोगिता नहीं रही। आज यदि हम बहुत ही अच्छी-अच्छी टाइपराइटर मशीनों का उत्पादन भी करते हैं तो वह किसी काम का नहीं। एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटैनिका विश्व का एक अत्यंत उपयोगी, महत्वपूर्ण व स्तरीय संदर्भ ग्रंथ रहा है। उसका प्रकाशन बंद हुए भी कई वर्ष हो गए। बदली हुई परिस्थितियों में भी यदि एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटैनिका के प्रिंट संस्करण का प्रकाशन जारी रहता तो वह समय और संसाधनों का दुरुपयोग मात्र होता। यदि हम समय के हर क्षण का उपयोग करते हुए खूब काम करते हैं, ढेर-ढेर गुणवत्तापूर्ण चीज़ों का उत्पादन करते हैं, बहुत सारा ज्ञान, कुशलताएँ अथवा अन्य विशिष्ट योग्यताएँ अर्जित करते हैं तो भी उसका लाभ तभी है जब हम उसका अपने या समाज के हित में उपयोग भी करें।

हमारा उत्पादन, हमारी सेवाएँ अर्थात् समय का उपयोग समाजोपयोगी होना भी अनिवार्य है। ज़रूरी है कि जो ज्ञान, कुशलता अथवा योग्यता हमने अर्जित की है उसका

सदुपयोग करते हुए नई कुशलता, योग्यता अथवा ज्ञान का अर्जन व विकास करें। समाज में बदलते समय के साथ उपयोगी बने रहने के लिए सम्यक् परिवर्तन भी ज़रूरी है। नए ज्ञान व नई तकनीकों को सीखने व अपनाने में भी देर न लगाएँ। कहने का अभिप्राय यही है कि हमारी कोई भी क्रिया निरर्थक या अनुपयोगी न हो अन्यथा वह समय का सदुपयोग नहीं कहला सकती। कुछ बुजुर्ग व अन्य अकर्मण्य लोग दिन भर ताश पीटते रहते हैं। कभी घर के किसी काम में हाथ बाँटाकर अथवा बच्चों के साथ खेलकर भी देखिए। अपने को उपयोगी बनाकर देखिए तो सही। फिर देखिए आपकी कितनी कद्र होती है। समय का सदुपयोग किए बिना यह असंभव है।

आज क्रिकेट का जादू पूरी दुनिया के सर पर चढ़ कर बोल रहा है। हम खेल के मैदान में जाकर क्रिकेट या फुटबॉल खेलने की अपेक्षा अपने ज़रूरी काम छोड़कर टीवी या रेडियो से चिपके बैठे रहते हैं। ज़रूरी व अनिवार्य सेवाएँ बाधित हो जाती हैं। इस गैरज़रूरी व छद्म खेलभावना के चलते असंख्य लोगों को कष्ट झेलना पड़ता है। खेल के नाम पर फिक्सिंग व सट्टे जैसी अवैधानिक व अनैतिक गतिविधियाँ आज चरम पर हैं। जो प्रशासन लोगों की सुविधा के लिए है वह सारा इसी व्यवस्था को देखने में लग जाता है। आम जनता को कितना कष्ट झेलना पड़ता है इसकी किसी को चिंता नहीं। इससे अधिक समय व संसाधनों का दुरुपयोग शायद ही अन्य कोई हो। विश्व फुटबॉल कप के दौरान जो गुटबाज़ी और उपद्रव देखने को मिलता है जिसमें खून-खराबा और हत्याएँ सामान्य बात है वह खेल नहीं आतंक का एक रूप बन गया है।

जिसने सार्थक व उपयोगी कार्यों को उचित समय पर करना सीख लिया दुनिया उसकी मुट्ठी में हो गई समझो। समय के सदुपयोग अर्थात् सार्थक व उपयोगी कार्यों को उचित समय पर करने के बहुत से दूसरे लाभ भी हैं। जो लोग समय का सदुपयोग करते हैं समाज भी उन्हें अच्छी नज़रों से देखता है। ऐसे लोगों की प्रतिष्ठा में वृद्धि होती है और उनका व्यक्तित्व भी अपेक्षाकृत आकर्षक व प्रभावशाली बन जाता है। ऐसे लोग व्यवसायादि में भी अधिक सफल होते हैं। समय की पाबंदी से प्राप्त प्रतिष्ठा, व्यक्तित्व विकास और सफलता से खुशी मिलना स्वाभाविक है। खुशी की अवस्था में हमारे शरीर में

स्थित अंतःस्रावी ग्रंथियों से ऐसे रसायन उत्सर्जित होते हैं, जो हमारी सेहत के लिए उत्तम होते हैं। अतः समय का सदुपयोग करना हमारे आर्थिक लाभ व सामाजिक प्रतिष्ठा के लिए ही नहीं, अच्छे स्वास्थ्य, आरोग्य व दीर्घायु के लिए भी अनिवार्य है।

—सीताराम गुप्ता

ए.डी.-106-सी, पीतमपुरा, दिल्ली-110034

कविता

आई होली

बड़े प्यार से अम्मा बोली।
खूब मनाओ भैया होली॥

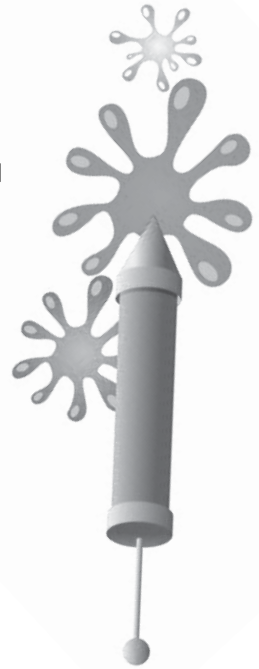
नहीं करेंगे कभी कुसंग।
डालो सभी परस्पर रंग॥

एक वर्ष में होली आई।
जी भर खेलो खाओ मिठाई॥

ध्यान लगाकर सुनो-पढ़ो।
नए-नए सोपान चढ़ो॥

बच्चे शोर मचाए होली।
उछले-कूदें खेलें होली॥

बड़े प्यार से अम्मा बोली।
खूब मनाओ भैया होली॥



संकलन- पुष्पलता माटा
सहायक निदेशक राजभाषा, रेलवे बोर्ड



मेरी लद्दाख यात्रा

रोज की भाग-दौड़ भरी जिंदगी से तनाव दूर करने के लिए पर्यटन स्थलों पर घूमना-फिरना रामबाण की तरह काम करता है। यूं तो भारत में घूमने-फिरने के लिए अनेक पर्यटन स्थल हैं, परन्तु लेह-लद्दाख की यात्रा और वह भी मोटरसाइकिल पर इन सबसे अलग है।

मोटर साइकिल चलाने का शौक रखने वालों (राइडर) के लिए लेह-लद्दाख जाना किसी तीर्थाटन से कम नहीं है। कई वर्षों से लद्दाख जाने की तमन्ना थी, जिसे 'फ़कीरा राइडर' के साथ जाकर पूरा कर सका। 'फ़कीरा राइडर' के बारे में सोशल मीडिया प्लेट-फार्म 'यूट्यूब' के माध्यम से पता चला और वर्षों की तमन्ना साकार होते दिखाई दी। उनके दिए गए नंबर पर 'व्हाट्सएप' के जरिए 'चैट' करने से जो जानकारी प्राप्त हुई, उसके आधार पर मैंने नेट बैंकिंग से 'एनईएफटी' द्वारा 'फ़कीरा राइडर' के खाते में 30,000/- रु. जमा कराए। यह यात्रा 17 जून से 30 जून तक की थी।

इसमें यात्रा के दौरान होटल में रात्रि भोजन, रात को ठहरने और सुबह के नाश्ते का खर्च शामिल था। मोटरसाइकिल में ईंधन और दिन में खाने-पीने का खर्च अलग था। इस यात्रा के लिए राइडर जैकेट, एल्बो एवं लेग गार्ड, हेलमेट, आपात समय के लिए एक्सट्रा ट्यूब, क्लैंचवायर, एक्सीलेरेटर वायर, रक्सोक बैग, दस्ताने, जूते, रेनकोट, आदि के लिए अलग से खर्च करना पड़ा। इसके बाद कार्यालय से 14 दिन की छुट्टी मंजूर कराने की समस्या आई, जिसे हमारे निदेशक महोदय ने तुरंत हल कर दिया।

दिल्ली से पठानकोट

पहले दिन दिल्ली से पठानकोट की यात्रा की। दिल्ली से पठानकोट की दूरी 480 कि.मी. है। दिल्ली से सुबह 6.30



बजे विजय चौक, इंडिया गेट से चलकर हम लोग सीधा मुरथल (सोनीपत के पास) में गरम-धरम ढाबा पहुंचे। यह ढाबा बॉलीवुड के 'ही-मैन' धर्मेन्द्र का है। यहां उनकी फिल्मों के बड़े-बड़े पोस्टर लगे हुए हैं। भारतीय सिनेमा की सुप्रसिद्ध ऐतिहासिक फिल्म 'शोले' की मोटरसाइकिल है। यहां सबने दही-परांठे और चाय का नाश्ता किया और फोटो खिंचवाए।

उसके बाद अंबाला, लुधियाना, जालंधर होते हुए शाम को 7.00 बजे पठानकोट पहुंचे। यहां दो-तीन होटलों में ठहरने का प्रबंध था। सभी राइडर दिनभर बाईक चलाकर थक चुके थे इसलिए रात का खाना खाकर सो गए।

पठानकोट से श्रीनगर

अगली सुबह सभी राइडर श्रीनगर जाने के लिए तैयार हो गए और अपनी-अपनी मोटरसाइकिलों में पेट्रोल भरवाकर 8.30 बजे तक अगली यात्रा शुरू कर दी। पठानकोट से श्रीनगर की दूरी 330 कि.मी. है। पठानकोट से ऊधमपुर तक का रास्ता बहुत अच्छा है। मोटरसाइकिल चलाने में आनंद आ गया। पटनी टॉप के पास चенानी-नाशरी सुरंग आती है जो 9.28 कि.मी. लंबी है। यह भारत की सबसे लंबी सड़क सुरंग है। सुरंग में गाड़ी चलाने का रोमांच ही अलग था। इसके बाद बनिहाल से काजीगुंड का रास्ता बहुत खराब है। बनिहाल से काजीगुंड के बीच 2.85 कि.मी. लंबी जवाहर सुरंग आती है। अनंतनाग से श्रीनगर का रास्ता बेहद खूबसूरत है, जिसे देखते ही लगा कि इसे धरती का स्वर्ग क्यों कहते हैं। इस रास्ते से गुजरते समय ठंडी हवाओं के झोंकों से सुखद अहसास हुआ, जो भीड़-भाड़ वाले शहरों में कभी महसूस नहीं होता। शाम को लगभग 7.00 बजे तक श्रीनगर पहुंचे। हमारा होटल डल लेक के सामने ही था, जिसे देखते ही दिनभर की थकान उतर गई।

श्रीनगर से कारगिल

अगले दिन सुबह डल झील में शिकारे पर झील के नज़ारों





का लुत्फ़ उठाया। उसके बाद अगले पड़ाव कारगिल की ओर चले पड़े। श्रीनगर से कारगिल की दूरी 204 कि.मी. है। श्रीनगर से निकलते ही बालटाल तक सिंध नदी साथ-साथ चलती है। यह पूरा रास्ता बहुत ही मनमोहक है। पहले सोनमर्ग आता है। उसके बाद सोनमर्ग से लेकर जोजिला दर्रे तक का मार्ग बहुत खराब है पूरा रास्ता कच्चा है, ऊबड़-खाबड़ है, कहीं-कहीं कीचड़ भी है। इस प्रकार के दुर्गम रास्तों पर मोटरसाइकिल चलाना बड़ा कठिन होता है। इन कठिनाइयों को पार करना ही तो जीवन का लक्ष्य है और कठिनाइयाँ रोमांचक हों तो उन्हें पार करने में आनंद भी उतना ही सुखद होता है।

कारगिल से लेह

अगली सुबह हम कारगिल से लेह की ओर रवाना हुए। कारगिल से लेह का सफ़र बिल्कुल अलग है। दोनों ओर पत्थर के पहाड़, मिट्टी के पहाड़ खड़े हैं। साथ में नदी बह रही है। इन वीरान पहाड़ों के बीच से गुजरने पर अलग-सा अहसास होता है। चारों ओर अजीब-सी शांति है। लेह पहुंचते-पहुंचते शाम हो गई। सभी ने होटल में आराम किया। अगले दिन लेह में ही घूमने का कार्यक्रम था। वहां हमने लेह पैलेस, मोनेस्ट्री देखी और लेह मार्केट घूमे।

लेह से नुबरा

लेह में दो रात आराम करने के बाद नई ऊर्जा और ताजगी के साथ नुबरा वैली की ओर रवाना हुए। लेह से नुबरा की दूरी 160 कि.मी. है। लेह से नुबरा जाते हुए 30 कि.मी. के बाद ही खारदुंगला आता है, जो विश्व की सबसे ऊंची सड़क है। खारदुंगला 17,582 फुट की ऊंचाई पर स्थित है। खारदुंगला जाने के लिए लेह के डीसी ऑफिस से इनर लाइन परमिट लेना जरूरी है, जिसके लिए फोटो पहचान-पत्र और 400/- रु. फीस की ज़रूरत होती है। खारदुंगला आते-आते बर्फबारी शुरू हो गई। रास्ते में एक जगह रुक कर मैगी, चाय नाश्ता

करते हुए शाम तक नुबरा पहुंचे। यहां टेंटों में व्यवस्था की गई थी। नुबरा वैली के कोल्ड डेज़र्ट (पूरे लद्दाख क्षेत्र को कोल्ड डेज़र्ट कहा जाता है) में दोहरे कूबड़ (डबल हम्प) वाले ऊंट देखने को मिलते हैं, जो कि केवल मंगोलिया में और भारत में नुबरा में ही हैं।

नुबरा से पंगोंग

नुबरा में मॉनेस्ट्री और महात्मा बुद्ध की 200 फुट ऊंची प्रतिमा देखने के बाद हम लोग पंगोंग के लिए रवाना हुए। नुबरा से पंगोंग की दूरी 200 कि.मी. है। पंगोंग झील न केवल विश्व की सबसे सुंदर झीलों में से एक है बल्कि यह खारे पानी की उच्चतम झीलों में से भी एक है। यहां भारत की प्रसिद्ध फिल्म 3 इडियट्स की शूटिंग भी हुई है। यहां का रात्रि तापमान शून्य से नीचे-3 डिग्री था। फोटोग्राफी के दृष्टिकोण से यह स्थान बहुत ही सुंदर है। रात को एक-एक तारा बिल्कुल स्पष्ट और बेहद खूबसूरत दिखाई दे रहा था।

पंगोंग से लेह

अगले दिन पंगोंग से वापस लेह की ओर चले। पंगोंग से लेह की दूरी 150 कि.मी. है। लेह आने के बाद लेह मार्केट गए। छोटी सी साफ-सुथरी मार्केट है।

लेह से सरचू

लेह में एक और रात बिताने के बाद अगले दिन हम सरचू के लिए रवाना हुए। लेह से सरचू की दूरी 250 कि.मी. है। लेह से चलने के बाद हम लोग तांगलांग ला पहुंचे। तांगलांग ला 17480 फुट की ऊंचाई पर स्थित है।





तांगलांग ला से चलकर हम लोग पांग वैली में चाय-नाश्ते के लिए रुके। पांग वैली का दृश्य बहुत सुहावना था। यहां रुककर यादों को कैमरे में कैद किया गया। पांग वैली से चलने के बाद हम गाटा लूपसे पहुंचे। इस रास्ते में 21 मोड़ (हेयर पिन बेंड) हैं। इसके आगे सरचू तक का रास्ता बहुत सुहावना है। अंधेरा होते-होते हम सरचू पहुंच गए। सरचू में हमारा ठहरने का इंतजाम टैटों में किया गया था। यहां का रात्रि तापमान शून्य से नीचे-13 डिग्री था। हालांकि इंतजाम बढ़िया था, परंतु रात भर ठंड में ठिठुरते रहे।

सरचू से मनाली

अगले दिन सुबह नाश्ता करके हम लोग अपने अगले पड़ाव मनाली की ओर चल दिए। सरचू से मनाली की दूरी 223 कि.मी. है। सरचू से निकलते ही 60 कि.मी. के बाद बारालाचा ला पहुंचे। इसकी ऊंचाई 16040 फुट है। यहां से मिलिट्री का कारवां गुजर रहा था, जिसके लिए बाकी सभी वाहनों को रोक दिया गया। यहां ट्रैफिक जाम की स्थिति हो गई थी। यहां रास्ते में जाम लगता है तो किलोमीटर लंबा जाम लगता है। इसके बाद हम लोग जिंग जिंग बार पहुंचे। यहां सबने चाय का लुत्फ उठाया और यहां मिलने वाला आहार 'मैगी' खाई। इसके बाद धीरे-धीरे आगे बढ़ते हुए दारचा, जिस्पा, केलांग, सिस्सु, खोकसर, ग्राम्फू होते हुए रोहतांग पास पहुंचे। रोहतांग पास, हिमालय की पीर पंजाल रेंज में 13050 फुट की ऊंचाई पर स्थित है। यहां जाने का सबसे उत्तम समय मई और जून है। पर्यटकों के लिए रोहतांग पास मंगलवार को बंद रहता है। रोहतांग पास जाने की अनुमति भारतीय सेना द्वारा दी जाती है। यहां भू-स्खलन सबसे अधिक होता है। यहां से मनाली की दूरी 51 कि.मी. है। जब हम रोहतांग पास पहुंचे तो भूस्खलन के कारण रास्ता बंद था। सीमा सड़क संगठन के कर्मचारी पूरी मेहनत से काम कर रहे थे। जेसीबी मशीन की सहायता से सड़क से मलबा हटाया जा रहा था। लगभग एक घंटे के इंतजार के बाद रास्ता खुला। शाम का अंधेरा होते-होते हम लोग मढ़ी, पलचन होते हुए मनाली पहुंचे।

मनाली से चंडीगढ़ और चंडीगढ़ से दिल्ली

रात भर आराम करने के बाद अगले दिन सुबह नाश्ता करने के बाद लगभग 10.00 बजे हम लोग चंडीगढ़ की ओर रवाना हुए। मनाली से चंडीगढ़ की दूरी 290 कि.मी. है। मनाली से कुल्लू, मंडी, सुंदरनगर, बिलासपुर, कीरतपुर, रूप नगर के रास्ते शाम तक चंडीगढ़ पहुंचे। रात को चंडीगढ़ में सेक्टर 17 की मार्केट में कुछ देर घूमने के बाद अपने होटल पहुंचे। रातभर रुकने के बाद अगली सुबह दिल्ली की ओर रवाना होना था। चंडीगढ़ से दिल्ली की दूरी 250 कि.मी. है। दिल्ली में रहने वाले राइडरों को अब दिल्ली पहुंचने का इंतजार था। इसलिए सुबह का नाश्ता करने के बाद सभी दिल्ली के लिए रवाना हुए।

यहां मैं कहना चाहूंगा कि ये कोई बाइक रेस नहीं थी कि खाली सड़क देखी और स्पीड बढ़ा दी। यहां सड़क के एक ओर ऊंचे-ऊंचे पहाड़ हैं वहीं दूसरी ओर हजारों फुट नीचे नदी बह रही है, जो कहीं कल-कल स्वर में बहती है, कहीं शांत स्वर में बहती है तो कहीं शोर करते हुए गुजरती है। यहां कभी-भी भूस्खलन हो जाता है। छोटे-छोटे कंकड़ गिरते रहते हैं। यहां तो सुबह होते ही जितना जल्दी हो सके अगले लक्ष्य की ओर निकल जाना चाहिए और अंधेरा होने से पहले ही अपने निर्धारित पड़ाव पर पहुंच जाना चाहिए। एक तो वैसे ही दूर-दूर तक सब सुनसान रहता है, ऊपर से रात होने के बाद अंधेरे में उसी नदी के पानी की आवाज़ भी भय, सिहरन, डर पैदा करती है। सड़कों पर स्ट्रीट लाइट का तो सवाल ही पैदा नहीं होता। यहां मकसद है प्रकृति को करीब से महसूस करना, प्रकृति से जुड़ना।

यहां विशेष रूप से हमें सीमा सड़क संगठन (बी.आर.ओ.) और भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण (एन.एच.ए.आई.) का आभार व्यक्त करना चाहिए, जो इन दुर्गम पहाड़ों पर अथक परिश्रम करते हुए हमारे लिए इन रास्तों को आसान बनाते हैं।

यदि आप अपने जीवन से प्रेम करते हैं तो आपको मोटरसाइकिल से लेह नहीं जाना चाहिए लेकिन यदि आप अपनी जिंदगी जीना चाहते हैं तो आपको मोटरसाइकिल से लेह की यात्रा जरूर करनी चाहिए।

—सतविंदर सिंह

सहायक निदेशक (राजभाषा),
रेलवे बोर्ड



भारतीय संस्कृति, तकनीक और भाषा

पौराणिक कथा है- सृष्टि के सृजक ब्रह्माजी के शय्याधीन होते ही उस रात सृष्टि का प्रलय हुआ। उस समय निद्रावश ब्रह्माजी के मुख से परमात्मा की दिव्यवाणी 'वेद' प्राकट्य हुआ। दानव हयग्रीव, वेद उठाकर भाग निकला परंतु वेदों की रक्षा के लिए भगवान विष्णु ने मत्स्यावतार धारण किया एवं हयग्रीव का वध करके वेदों की रक्षा की। इस कथा के पीछे गहरा रहस्य ये है कि वेद का मतलब संस्कृति। प्रख्यात समाजशास्त्री मेकाइवर के अनुसार हम जो कुछ सोचते हैं वह है संस्कृति और जो कुछ हम करते हैं वह सभ्यता है। तात्पर्य यह है कि संस्कृति सिद्धांत का रूप है और सभ्यता उसी का व्यावहारिक रूप है।

आजकल ऐसी दिव्य संस्कृति के सामने सबसे बड़ी चुनौती है। संस्कृति की तो बात ही छोड़ दीजिए, आज फेसबुक, व्हाट्सएप के कारण हमारे परिवार बिखर रहे हैं। मैं एक विवाह में गया था, वहाँ मित्र ने अपने बच्चे से मेरा परिचय कराना चाहा। बच्चा मोबाइल पर गेम में ही व्यस्त रहा, उसने ऊपर नज़रें उठाकर भी मुझे नहीं देखा। मित्र खिसियाकर दूसरे विषय पर बात करने लगे। मुझे याद आता है जब हम छोटे थे तो अनजान व्यक्ति के भी पहले पाँव छूते थे, फिर बताया जाता था कि फलां कौन है। कार आवश्यक है पर संस्कार के बिना सब बेकार है।

द्रुत गति के ये साधन किसी भी स्थिति में बुरे नहीं कहे जा सकते पर क्या हमारी संस्कृति की कीमत पर... चिंता और चिंतन का विषय एक और है... संस्कृति के साथ भाषा भी विकृत हो रही है। एक नई भाषा ढल रही है। आजकल भाषा का 'शार्टकट रूप' प्रयोग में लाया जा रहा है जो निश्चित ही खतरे की घंटी है। इससे भाषा की शुद्धता और संप्रेषण के अस्तित्व पर संकट छा रहा है। मोबाइल, व्हाट्सएप, फेसबुक पर तो धड़ल्ले से शार्टकट और रोमन

भाषा में चेटिंग हो रही है। अब इस भाषा में अर्द्ध चन्द्राकर, उर्दू के नुक्ते, अनुस्वार, चंद्रबिंदु की बात करना बेमानी होगी। ये सब तो किसी अजायबघर में वस्तु हो जायेंगे।

हम ताड़, ताम्र पत्र से लेकर कागज़ से होते हुए पेन ड्राइव तक आ गये हैं। पहले हमें पहाड़े (टेबल) मौखिक याद होते थे और कहीं से, कुछ भी शिक्षक या दादाजी पूछ लेते थे, हम तुरंत बता देते थे पर कैलकुलेटर आ गये। अब हम छोटा-सा हिसाब भी मोबाइल के कैलकुलेटर पर करते हैं। मतलब क्षमता मशीनों पर निर्भर होती जा रही है, उसी तरह हम लिखने, पढ़ने की बजाय 'की-बोर्ड', वाइस टाइपिंग पर निर्भर होते जा रहे हैं।

महानगरों में टॉवर बनते जा रहे हैं, मोबाइल की रेंज नहीं मिलती है। कंपनी वाले से शिकायत की तो उसका कहना था कि साहब लैंडलाइन ले लीजिए। हम फिर पुराने उसी दौर में जा रहे हैं ...यदि बैटरी खत्म हो जाए तो किसी के फोन नंबर के लिए थोड़ी देर के लिए मोहताज हो जायेंगे पर पुराने ज़माने की डायरी होती तो तुरंत फोन नंबर मिल जाता। विज्ञान और तकनीक तो रोज़ बदलती रहती है पर संस्कृति और भाषा नहीं बदलती। विज्ञान और संस्कृति में तालमेल हो तो कितना अच्छा हो, ये पूरक नहीं हो सकते। मेरे मित्र और वरिष्ठ शायर श्री हस्तीमल हस्ती मुझे मिले तो पूछने लगे कि मोबाइल में हिंदी में 'ज्ञ' और 'ऋ' नहीं आता है। मैंने बता दिया पर सहज रूप से पूछा कि ये अक्षर नहीं आते थे तो आप क्या करते थे... उन्होंने कहा कि मैं ऐसा वाक्य, शब्दों का प्रयोग करता था जिनमें इन अक्षरों की ज़रूरत न पड़े। लगा कि तकनीक तो हमारी भाषा को बदल रही है। कई लोग हस्ती जी जैसा ही करते होंगे।

प्रसिद्ध वैज्ञानिक अलबर्ट आइंस्टीन भी संस्कृति में विश्वास करते थे। विज्ञान चुनौती दे सकता है पर संस्कृति की आस्था को डिगा नहीं सकता। ऋग्वेद की वैदिक

ऋचाएं भी समय को 'काल' कहती हैं और इस 'काल' पर वैज्ञानिक विजय प्राप्त नहीं कर सके हैं। तकनीक, विज्ञान बेहतर साधन हो सकते हैं पर साध्य नहीं हो सकते। कल्पना करो कि तकनीक-विज्ञान और संस्कृति में युद्ध हो जाए तो विज्ञान को निश्चित रूप से झुकना होगा। संस्कृति ठाठें मारकर, सीना तानकर खड़ी रहेगी। कहीं पढ़ी एक लघुकथा याद आती है। बच्चों ने दीवाली पर पूरे घर को रंग-बिरंगे बल्बों, सीरिज से सजा दिया। बूढ़े दादाजी कहते रहे गये कि शगुन के मिट्टी के पाँच दीपक ले आओ पर किसी ने सुना नहीं। लक्ष्मी पूजन के समय अचानक लाइट चली गई। तब दीपक बहुत याद आये। वो धोखा तो नहीं देते। जैसे एस्केलेटर धोखा दे सकता है पर सीढ़ियाँ कभी धोखा नहीं देंगी। हम यह न भूलें कि भारत में जब पहली बार हवाई जहाज बना था तो उसके कलपुर्जे बैलगाड़ी में लाये गये थे। अमेरिका में वर्ष 2000 में हुए विज्ञान सम्मेलन में सिद्ध किया गया कि ब्रह्मांड विज्ञान में ईश्वर के अस्तित्व के प्रमाण मिले हैं।

विज्ञान, तकनीक और संस्कृति-भाषा को साथ लेकर चलें। विवेकानंद ने भी कहा था कि भारतीय आध्यात्मिकता की नींव पर विज्ञान का महल खड़ा करना चाहिए। आइंस्टीन भी कहते थे कि विज्ञान, ज्ञान आध्यात्मिकता के बिना अंधा है और ज्ञान-विज्ञान के बिना लंगड़ा हैं, इनमें समन्वय बहुत आवश्यक है।

हम 'डिजिटल इंडिया' की कल्पना को साकार करना चाहते हैं तो उसके साथ संस्कृति, भाषा को सामंजस्य बैठाना होगा। भाषा, संस्कृति, संस्कार, एक सुंदर उपहार है। हम हमारे शास्त्रों, धर्म, कला, संस्कृति, भाषा, संगीत क्रीड़ा, साहित्य को जीवन और व्यवहार से जोड़ें अन्यथा सरस्वती नदी और संस्कृत की तरह ये भी धीरे-धीरे लुप्त हो जायेंगे। इसका कारण संभवतः युवापीढ़ी का पश्चिमी सभ्यता का अंधानुकरण है। उन्हें हमारी क्षमता, ज्ञान पर भरोसा कम है। हमें उन्हें शिक्षित और दीक्षित में अंतर बताना होगा।

विज्ञान, तकनीक प्रगति के साधन है। भाषा संस्कृति

की संवाहक हैं। क्या ऐसा नहीं हो सकता कि हम विज्ञान, नई तकनीक का उपयोग साहित्य, कला, संस्कृति को सुरक्षित रख सकें। हमारे पौराणिक (रामायण, महाभारत, गीता, सूरसागर), हमारी मीठी बोलियों को, चिकित्सा, धर्म, दर्शन को संरक्षित रखें तभी हम वैश्विक-स्तर पर महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। हम कैसे भूल सकते हैं कि नालंदा, तक्षशिला विश्वविद्यालय में पूरे विश्व के विद्यार्थी अध्ययन के लिए आते थे। याद रखना होगा कि हम बबूल का पेड़ बोयेंगे तो आम के पेड़ कहाँ से आयेंगे। मानवीय जीवन मूल्य और समाज की बदलती मान्यताओं को, वेदों की ओर ले जाना होगा। इसमें भी हम तकनीक का सहारा ले सकते हैं। कारण, अब योग की जगह, भोग, रोग ने ले ली है। हमें अधिकारों का ज्ञान तो है पर कर्तव्यों का भान नहीं है। संस्कृति अजायबघर की वस्तु बन गई है। क्या ऐसा नहीं हो सकता कि सादा जीवन-उच्च विचार, संतोषी सदा सुखी, त्यागपूर्वक भोग, सत्य, अहिंसा, त्याग, अपरिग्रह, ब्रह्मचर्य, सात्विकता, आस्था, वसुधैव कुटुंबकम् जैसे अनमोल खज़ाने को विज्ञान - तकनीक से जोड़ें। पैसा कमाने की अंधी दौड़ हमें किस मुहाने पर ले जा रही है। हम अपनी प्रगति पर कितने ही मुरीद हो लें पर यह सत्य है कि झुरमुट की ओट में चहकने वाले पक्षियों का हर गान हर्षगान नहीं होता। मूर्धन्य साहित्यकार श्री कन्हैया माणिक लाल मुंशी ने कहा था कि हम आधुनिक तो हुए परंतु सुसंस्कृत नहीं हुए। बिजली के कारण अंधेरा दूर हो गया पर चकाचौंध करने वाली रोशनी ने हमारी सभ्यता-संस्कृति को धुंधला कर दिया है।

विज्ञान, तकनीक, संस्कृति और भाषा को साथ में लेकर चलें। इसी में सबका हित है। संस्कार और भाषा की ज्योति से विश्व को सदाचार की रोशनी से हमें आलोकित करना है।

—डॉ. अनंत श्रीमाली
(पूर्व सहायक निदेशक, भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग)
हमलोग सोसायटी, बि.नं. 75 ए विंग 102 तिलक नगर,
चेंबूर, मुंबई

रेल मंत्रालय (रेलवे बोर्ड) के तत्वाधान में पूर्व तट रेलवे, भुवनेश्वर में
अखिल रेल नाट्योत्सव के सफल आयोजन के दृश्य



